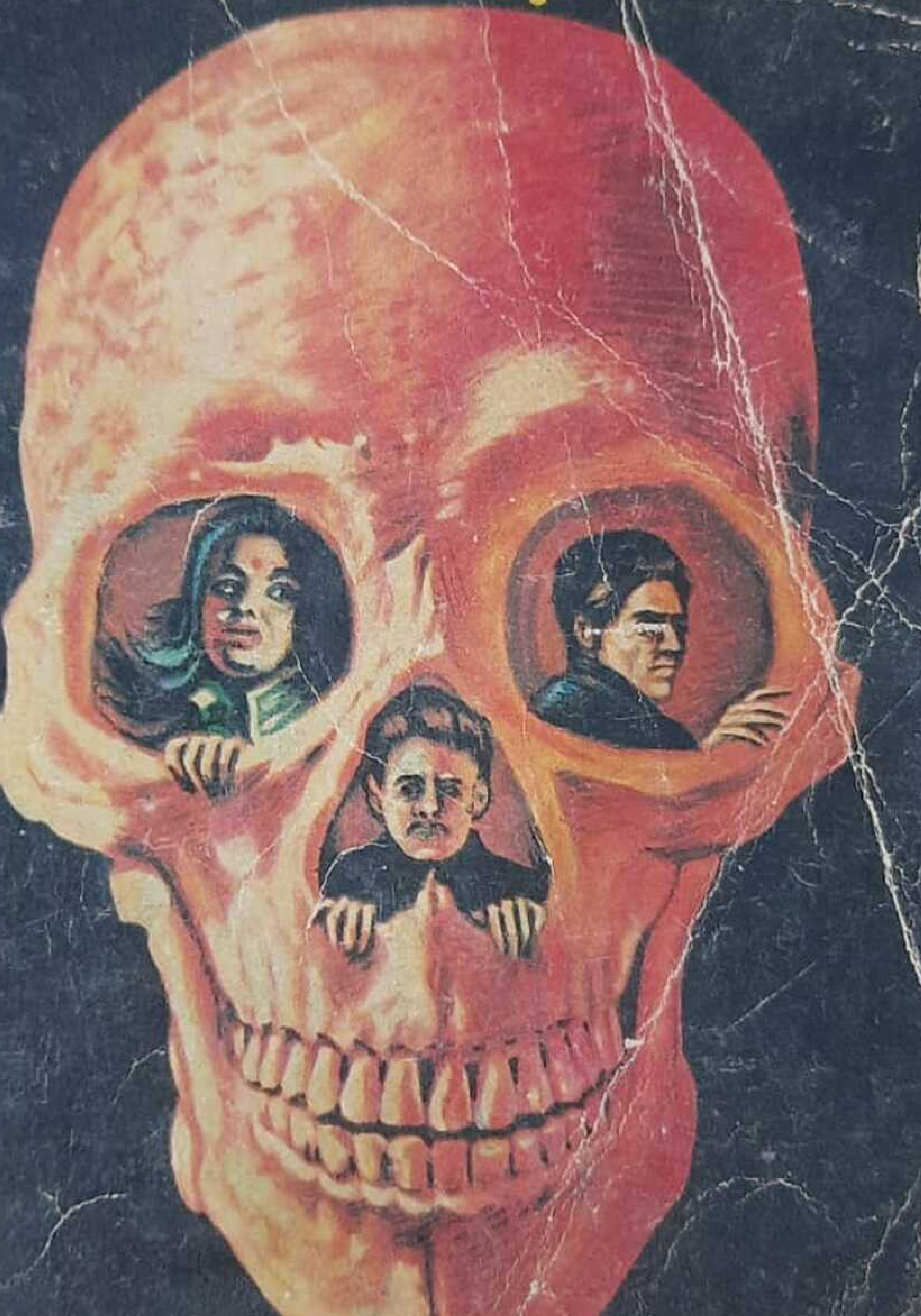
खतरनाक जासूस सीरीज़

मौत की खिड़कियाँ

कैप्टन गुप्ता



पहनी हुई थी। उसका चेहरा नीचे की ओर था।

रजनीश की आँखें मर्द की पीठ पर जा अटकीं। पीठ में एक खंजर धँसा हुआ था। खंजर से बने घाव का लहू जम चुका था। रजनीश की नजरें लाश पर से हट गयीं। अब वह दीवार को घूर रहा था। लाश उस दीवार के सहारे खड़ी थी। रजनीश के आते ही वह फर्श पर गिर पड़ी थी। रजनीश सोच रहा था कि दीवार के सहारे लाश पहले कैसे टिकी हुई खड़ी थी।

रजनीश वहाँ से पलटा तो उसके साथी भी पीछे-पीछे पलटे। वे सब साथ वाले कमरे में प्रविष्ट हुए। कमरे में आते ही वे ठिठक कर खड़े रह गये।

सामने एक आरामकुर्सी पर एक नौजवान बैठा था। वह मानो आनेवालों को घूर रहा था। रजनीश हैरान रह गया। उसके सामने जो नौजवान था, वह भी एक लाश बन चुका था। उसकी आँखें निस्तेज थीं। लाश का सिर कुर्सी की टेक से टिका हुआ था। उसकी आँखों में वह भय की छाया अब भी थी, जो मरते समय रही होगी। लाश की कनपटी पर लहू जमा हुआ था।

प्रमोद ने पूछा, "रजनीश! उस मर्द और नौजवान की लाशें देखकर ही वह लड़की चीखी थी। वह भाग क्यों गयी? वह मर्द और यह नौजवान कौन हैं?"

रीता ने कहा, "वह लड़की बँगले के पिछले दरवाजे से भाग गयी लगती है।"

अपने साथियों की बातों पर रजनीश ने कोई टीका-

टिप्पंणी नहीं की।

"अब ?" अंजू ने रजनीश को देखते हुए पूछा।

रजनीश ने सुझाव दिया, "हम बँगले से बाहर चलते हैं। बाहर जाकर हम किसी को नहीं बताएँगे कि हमने यहाँ क्या देखा है। बाहर चलकर ही हम पूछ-ताँछ कर सकते हैं कि यह बँगला किसका है, या इस बँगले में कौन रहता है ?"

यह कहकर रजनीश बाहर निकल आया। सब साथी उसके पीछे-पीछे बाहर आ गये। उन्होंने बँगले के बारे में पूछ-ताँछ शुरू कर दी। पता चला कि वह बँगला सेठ घनश्यामदास का था। उसके दो बेटे थे। बड़ा बेटा विजय वाराणसी में इंजीनियरिंग का कोर्स कर रहा था। छोटा बेटा संजय बम्बई में व्यवसाय-प्रबन्ध का कोर्स कर रहा था। सेठ घनश्यामदास ने दूसरी शादी की थी। उनकी बेटी सरला एक विदेशी फर्म में नौकर थी। सरला की अपनी सौतेली माँ सुषमा से बनती नहीं थी। सरला वही लड़की थी जो टैक्सी में आयी थी और अचानक लोप हो गयी थी।

रजनीश पूछ-ताँछ कर चुका तो प्रमोद बोला, "रजनीश ! हमने बँगला अच्छी तरह नहीं देखा। सरला ने दो लाशें देखीं और चीखती हुई भाग गयी। कहीं वह बँगले के पिछले हिस्से में बेहोश न पड़ी हो।"

"तुम ठीक कह रहे हो, प्रमोद ! आओ, चलकर देखें।" रजनीश ने कहा।

लोगों की नजरें बचाकर वे फिर उस बँगले में चले आये। सरला की हर जगह तलाश की गयी, मगर वह कहीं नहीं मिली। जिस कमरे में काली कमीज-पैन्टवाली लाश पड़ी थी, वहाँ रीता ने एक अजीब बात देखी। वहाँ लकड़ी का एक खूबसूरत डिब्बा था, जिसके चारों ओर शीशे लगे हुए थे। उस डिब्बे में प्लास्टर आफ पेरिस की एक खोपड़ी पड़ी थी। खोपड़ी दूधिया सफेद थी। उसकी आँखों के गड्ढे बड़े-बड़े थे। एक आँख में हरा शीशा लगा हुआ था। दूसरी आँख में लाल रंग का शीशा था। एक गड्ढा नाक पर था। वहाँ पीला शीशा लगा हुआ था।

रीता ने रजनीश को पुकारा और दौड़ती हुई उसके पास पहुँची। उसने कहा, "रजनीश भैया ! आओ तुम्हें एक अनोखी चीज दिखाऊँ। उस कमरे में शीशे का एक डिब्बा है। डिब्बे में एक खोपड़ी पड़ी है।"

"खोपड़ी !" रजनीश के मुँह से निकला।

उसके पीछे-पीछे सब साथी उस कमरे की ओर लपके, जिधर रीता और रजनीश जा रहे थे। रजनीश ने कुछ देर डिब्बे को घूर-घूरकर देखा। फिर वह बोला, "जब हम पहली बार इस क़मरे में आये थे, तब यह डिब्बा यहाँ नहीं था। यह कौन यहाँ रख गया ? क्यों रख गया ?"

डिब्बे का अगला मोटा शीशा फोल्डिग था। वह ऊपर उठ जाता था। रजनीश ने वह शीशा ऊपर उठा

दिया। डिब्बे में से सफेद खोपड़ी निकालकर हाथों में ले ली। उसने खोपड़ी की नाक में लगे पीले शीशे में झाँककर देखा। उसे कुछ दिखायी न दिया। फिर उसने खोपड़ी की बायीं आँख के लाल शीशे में झाँका। उसमें से भी कुछ नजर न आया। इसके बाद उसने दायीं आँख के हरे शीशे में झाँककर देखा। उसमें उसे एक फोटो दिखायी दी। यह उस आदमी की फोटो थी, जिसकी लाश उस कमरे में पड़ी थी। रजनीश चौंक पड़ा।

"क्या बात है, रजनीश ? तुम चौंक क्यों पड़े ?" अंजू ने पूछा।

रजनीश ने बताया, "बड़ी हैरानी की बात है कि इसमें एक फोटो है और इस व्यक्ति की फोटो है, जिसकी लाश तुम्हारे सामने है।"

"खोपड़ी में फोटो !" प्रमोद के मुँह से निकला। उसने रजनीश के हाथ से सफेद खोपड़ी ले ली। उसने खोपड़ी के शीशे में फोटो देखी तो चकित रह गया।

अंजू और रीता ने भी उस खोपड़ी में फोटो देखी।

रजनीश बोला, "हम लोग लगभग पौन घंटे तक बँगले से बाहर रहे। इस अवधि में यह खोपड़ीवाला डिब्बा यहाँ कौन रख गया ?"

"बात बड़ी निराली लगती है, मगर है भी सच।" अंजू बोली, "लगता है, कोई बँगले के पीछे से आया होगा। मगर वह था कौन ?"

"आओ, जरा बँगले के पीछे चलें !"

उन्होंने बँगले के पीछे जाकर छानबीन शुरू कर दी। पिछले हिस्से में एक पतली गली पड़ती थी। वहाँ नीम का एक पेड़ था। पेड़ के नीचे एक चारपाई पड़ी थी। उसके ऊपर एक अस्सी वर्ष की बुढ़िया बैठी थी। वह नारियल से बना हुआ हुक्का पी रही थी।

रजनीश ने उससे पूछा, "अम्माँ! इस ओर से बँगले में कौन आया था?"

बुढ़िया ने हुक्के का कश खींचा और खाँसती हुई उन सबको डरावनी आँखों से देखा। फिर छाती पर हाथ मारकर साँस ठीक करती हुई बोली, "आदमी तो कोई नहीं देखा, एक लंगूर अन्दर गया था।"

"लंगूर?"

"हाँ, लंगूर!" बुढ़िया कुछ झुंझलाकर बोली, "उस लंगूर के हाथ में काले कपड़े वाला एक डिब्बा था।"

"अम्माँ! उस डिब्बे में क्या था?"

"मैं क्या जानूँ कि उस डिब्बे में क्या था?" बुढ़िया ने झिड़कने के स्वर में कहा।

रजनीश भी पीछा छोड़नेवाला नहीं था। उसने नया प्रश्न पूछा, "अम्माँ! वह लंगूर क्या बँगले से बाहर नहीं आया?"

"बँगले से लंगूर तो नहीं आया, मगर एक लम्बा आदमी बाहर आया था। उसका चेहरा भी लम्बा था। उसने बगल में एक कोट दबा रखा था, बालों का कोट।"

"उसके हाथ में कोई डिब्बा तो नहीं था?" रजनीश

ने पूछा ।

"नहीं !" बुढ़िया को फिर खाँसी आ गयी । वह छाती पर हाथ मारने लगी ।

रजनीश बुढ़िया की बातें सुनकर चौंक पड़ा था ।

रीता कुछ पूछने लगी थी कि गली के मोड़ से बहुत से कदमों की आहट आयी । रजनीश ने देखा कि साथ-वाली गली से वही लड़की आती दिखायी दी, जो बँगले में प्रविष्ट हुई थी, मगर बाहर निकलती दिखायी नहीं दी थी । वह सरला थी । उसके पीछे इंस्पेक्टर धरती-धकेल था ।

●

इंस्पेक्टर धरतीधकेल ने रजनीश और उसके साथियों को उस गली में देखा तो हैरान रह गया । सरला ने अच्छे घरानों के बच्चे गली में खड़े देखे तो वह भी कुछ हैरान हुई ।

पास पहुँचकर इंस्पेक्टर ने कहा, "रजनीश ! तुम यहाँ कैसे ?"

प्रमोद झट से बोल उठा, "नमस्ते नसपकड़ साहब ! नहीं-नहीं जबान गोता खा गयी । इंस्पेक्टर साहब, नमस्ते !"

"नहीं, प्रमोद ! अब कोई छेड़खानी नहीं होगी। इंस्पेक्टर साहब से अब हमारी सुलह है। इनसे कोई मजाक नहीं होगा।" रजनीश ने कहा, फिर वह इंस्पेक्टर की ओर मुड़कर बोला, "इंस्पेक्टर साहब ! हम यहाँ जादूगर का तमाशा देखने आये थे। तमाशा भी देखा और इस बँगले में दो लाशें भी देखीं।"

"क्या तुम जानते हो कि लाशें किनकी हैं ? उसने पूछा।

"नहीं, मैं उन्हें नहीं पहचानता।"

"मैं भी उन्हें नहीं पहचानती।" सरला ने कहा, "मेरे घर में लाशें न जाने कहाँ से आ गयीं !"

इंस्पेक्टर और सरला के साथ जासूस-मण्डली भी बँगले में आ गयी। सबसे पहले वे वहाँ पहुँचे, जहाँ काली कमीज-पैन्ट वाले की लाश पड़ी थी।

सरला की दृष्टि जमीन पर पड़ी तो वह ठिठक गयी। काले डिब्बे में प्लास्टर ऑफ पेरिस की खोपड़ी पड़ी थी। वह बोली, "यह खोपड़ी पहले तो यहाँ नहीं थी !" फिर रजनीश और उसके साथियों की ओर मुड़कर उसने पूछा, "क्या यह खोपड़ी तुम लाये हो ?"

"नहीं !" रजनीश ने उत्तर दिया। फिर स्वयं ही बता दिया, "यह खोपड़ी यहाँ एक लंगूर लाया था।"

"लंगूर ?" यह कैसे हो सकता है !" सरला ने आश्चर्य से कहा।

इंस्पेक्टर भी चकित रह गया। वह खोपड़ीवाले

डिब्बे के पास चला आया। उसने फोल्डिंग शीशा ऊपर उठाकर खोपड़ी उठा ली। खोपड़ी में लगे शीशों में उसने झाँककर देखा। फिर चकित स्वर में बोला, "अरे ! इसमें तो फोटो है।"

"हाँ, और यह फोटो इस आदमी का है।" यह कहकर रजनीश ने लाश की ओर इशारा किया।

इंस्पेक्टर ने आश्चर्य से लाश की ओर देखते हुए कहा, "इसकी फोटो खोपड़ी में कैसे आ गयी ?"

"इंस्पेक्टर साहब ! आप पहले दोनों लाशें देख लीजिये।" रजनीश ने सुझाव दिया।

रजनीश की बात मानकर इंस्पेक्टर ने दूसरी लाश भी देखी। फिर रजनीश ने पास आकर उससे पूछा, "कहिए, आपने क्या देखा ?"

"यह देखा कि यहाँ दो आदमियों की हत्या की गयी है।" इंस्पेक्टर बोला।

"इनकी हत्या यहाँ नहीं की गयी। हत्या कहीं और की गयी है। केवल ये लाशें यहाँ लायी गयी हैं। अगर इनकी हत्या यहाँ की जाती तो फर्श पर लहू के धब्बे होते।" रजनीश ने बताया, "आपने खोपड़ी में फोटो भी देख ली है। अगर इस आदमी की हत्या यहाँ की गयी होती, तो इतनी जल्दी इसकी फोटो कैसे तैयार हो जाती ? और फोटो बनकर इस खोपड़ी में कहाँ से आ जाती ?"

"तुम ठीक कह रहे हो, रजनीश !" इंस्पेक्टर ने

इतना कहकर इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया, "दो लाशें यहाँ लायी कैसे गयीं ? क्या किसी ने भी लाशें लाने वाले को नहीं देखा ?"

"इंस्पेक्टर साहब ! यह एक पहेली है। इसे आप ही सुलझा सकते हैं।" रजनीश ने कहा।

इंस्पेक्टर बोला, "चलो, इस सवाल को अभी यहीं छोड़ो। यह बताओ कि एक लंगूर यह खोपड़ी यहाँ कैसे लाया ?"

"वह लंगूर नहीं था, बल्कि कोई लम्बा-तड़ंगा आदमी था। उसने लोगों को झाँसा देने के लिए लंगूर की खाल ओढ़ रखी थी। वही इस खोपड़ी को लाया होगा।"

इतने में बँगले के बाहर एक कार आकर रुकी। उसमें से सेठ घनश्यामदास और उनकी दूसरी पत्नी सुषमा निकले। कमरे में आकर उन्होंने पुलिस इंस्पेक्टर और कुछ बच्चों को खड़े देखा, तो वे बड़े हैरान हुए। जब उन्होंने घर में लाशें देखीं तो उन दोनों के होश उड़ गये।

सरला ने अपने पिता को सारी घटना सुना दी।

सेठजी बोले, "ये दोनों मेरे वास्ते अजनबी हैं। मैं इनको नहीं पहचानता। इनकी लाशें मेरे बँगले में क्यों लायी गयीं ?" कहकर वह गहरी चिंता में डूब गये।

इंस्पेक्टर ने अपने पुलिस-दल को जरूरी कार्यवाही के लिए बुलवाया। रजनीश और उसके साथी अपना कार्य पूरा करके वहाँ से चल पड़े।

रास्ते में रजनीश ने प्रमोद से कहा, "तुम अपनी साइकल लेकर सेठ घनश्यामदास के बँगले की निगरानी करो। अंजू तुम्हारे साथ रहेगी। अगर कोई नयी घटना हो, तो मुझे सूचित कर देना।"

प्रमोद और अंजू ने उसकी बात स्वीकार कर ली। वे दोनों घनश्यामदास के बँगले से जरा दूर हटकर एक पेड़ की ओट में बैठ गये। वहाँ से वे बड़ी आसानी के साथ सेठजी के बँगले की निगरानी कर सकते थे।

रजनीश ने अपनी साइकिल पर रीता को बिठाया और चल दिया। रीता की गोद में पप्पी था।

●

प्रमोद और अंजू देर तक पेड़ की ओट में बैठे सेठ घनश्यामदास के बँगले की निगरानी करते रहे।

शाम के साढ़े चार बजे बँगले के सामने एक एम्बुलेंस आकर रुकी। उस एम्बुलेंस में दो लाशें रख दी गयीं। एम्बुलेंस के जाने के बाद इंस्पेक्टर धरतीधकेल अपने पुलिस-दल के साथ चला गया।

थोड़ी देर बाद वे क्या देखते हैं कि सामने से एक स्वामीजी चले आ रहे थे। उन्होंने गेरुए रंग का कुर्त्ता पहन रखा था। कुर्त्ते के नीचे तहमद भी गेरुए रंग का


मौत
की खिड़कियाँ

बाँध रखा था। उनके दायें हाथ में नाग जैसी सर्पाकार छड़ी थी। बायें हाथ में उन्होंने काला कमण्डल थाम रखा था। पैरों में कपड़े के जूते थे। वह झुककर चल रहे थे, क्योंकि उनकी पीठ पर एक भारी थैला था।

स्वामीजी ने जरा रुककर इधर-उधर झाँका। फिर चुपचाप सेठ घनश्यामदास के बँगले में घुस गये।

अंजू ने पूछा, "प्रमोद ! यह स्वामीजी कौन हैं ?"

"सोचने की बात यह है, अंजू ! कि स्वामीजी की पीठ पर लदे भारी थैले में क्या है ?" प्रमोद ने कहा।

उन दोनों की आँखें स्वामीजी पर लगी थीं जो दरवाजे पर धीरे-धीरे दस्तक दे रहे थे।

थोड़ी देर में दरवाजा खुल गया। दरवाजे में सेठजी की पत्नी खड़ी थीं। वह स्वामीजी को देखकर मुस्करा उठीं। उन्होंने स्वामीजी को प्रणाम किया। स्वामीजी ने सुषमा के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया।

स्वामीजी बँगले में प्रविष्ट हुए।

बँगले का दरवाजा बन्द हो गया।

आधा घण्टा बीत गया। स्वामीजी बाहर न आये।

प्रमोद और अंजू इस व्यर्थ की प्रतीक्षा से ऊब गये। अँधेरा उतर आया था, अतः वे घर जाने की सोच रहे थे।

तभी अंजू की दृष्टि सड़क पर पड़ी। थोड़ी दूर आगे जाकर सड़क दायें हाथ मुड़ जाती थी। जहाँ सड़क मुड़ती थी, वहाँ एक बहुत बड़ा बँगला था। बँगले पर अँग्रेजी में 'टू लेट्' का बोर्ड लगा था, अर्थात् 'किराये के लिए

कर उन्होंने सेठजी के बँगले की निगरानी शुरू कर दी।

दस मिनट गुजर गये।

फिर उन्होंने एक लम्बे लंगूर को सेठजी के बँगले के पिछले हिस्से से निकलते हुए देखा। लंगूर के हाथ में एक थैला था। थैले में कोई चीज थी। थैला लेकर लंगूर एक झाड़ी के पीछे चला गया।

अंजू और प्रमोद ने देखा कि लंगूर ने अपनी साइकिल उस झाड़ी के पीछे छिपा रखी थी। अब वह साइकिल के कैरियर में अपना झोला बाँध रहा था। थैला बाँध चुकने पर उसने झाड़ी के पीछे से साइकिल निकाली और उस पर सवार होकर चल दिया।

प्रमोद और अंजू भी साइकिल पर सवार हो गये। उन्होंने लंगूर का पीछा शुरू कर दिया।

लंगूर एक जगह जाकर रुक गया।

"प्रमोद ! चौकस रहना, लंगूर रुक गया है।" अंजू ने उसे चेताया, "देखना, कहीं वह हमारे ऊपर हमला न कर दे !"

प्रमोद ने कोई उत्तर न दिया। वह सावधानी से साइकिल चलाता रहा। प्रमोद ने उसके पास पहुँचकर अपनी साइकिल रोक ली।

लंगूर ने कोई साइकिल रुकने की आवाज सुनी। उसने चौंकते हुए मुड़कर देखा।

अंजू और प्रमोद दंग रह गये। उन दोनों के मुँह से निकला, "रजनीश तुम !"

खाली' है। अंजू ने देखा कि उस बँगले में से एक साइकिल-सवार निकल रहा था।

"अरे प्रमोद ! उधर देखना ! लंगूर !" अंजू बोली।

इतने में लंगूर साइकिल पर एक गली में घुस गया।

"लंगूर !" प्रमोद ने हैरानी से पूछा, "यह तुमने क्या कहा ?"

"मैंने एक लंगूर को साइकिल चलाते देखा है, प्रमोद ! साइकिल के कैरियर पर एक थैला था।" अंजू ने बताया।

"तुम्हारा मतलब है कि लंगूर इस बार कोई नयी खोपड़ी लाया है ?"

"हो सकता है वह नयी खोपड़ी लाया हो, जिसमें कोई नयी फोटो हो।"

इतने में उन दोनों की नजरें सेठजी के बँगले के गेट पर जा अटकीं। गेट में से स्वामीजी बाहर आ रहे थे। अब उनकी पीठ पर भारी थैला नहीं था।

अंजू और प्रमोद ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"बोलो अंजू ! फैसला करो कि लंगूर की निगरानी करें या स्वामीजी का पीछा करें ?" प्रमोद ने पूछा।

"लंगूर की निगरानी करना ज्यादा जरूरी है। सेठजी के बँगले से लंगूर का सम्बन्ध पहले ही जुड़ा हुआ है।" अंजू ने राय दी।

इस तरह उन दोनों ने स्वामीजी का पीछा करने का विचार त्याग दिया। साइकिल उठाकर वे बँगले के बाहर चले आये। एक मकान की दीवार के पीछे छिप-

रजनीश हँसने लगा।

"रजनीश ! तुम यह लंगूर जैसा कोट पहनकर क्या सेठ के बँगले में गये थे ?" अंजू ने पूछा।

"हाँ !"

"रजनीश भैया, तुम इस थैले में वहाँ से क्या लाये हो ?" प्रमोद ने पूछा।

"प्लास्टर ऑफ पेरिस की खोपड़ी लाया हूँ, जिसमें उस मृत आदमी की फोटो है।" रजनीश ने बताया।

"तुम इस खोपड़ी का क्या करोगे ?" अंजू ने पूछा।

"इस खोपड़ी में ही तो इस हत्या के काण्ड का भेद छिपा है।" रजनीश ने कहा। फिर वह प्रमोद से बोला, "तुम यह खोपड़ी अपने घर ले जाना। इसे सावधानी से कागज या किसी कपड़े में छिपाकर रख देना !"

"एक बात बताओ, रजनीश !" अंजू बोली, "तुमने लंगूर का मेक-अप बनाने के लिए यह कोट कहाँ से उड़ाया ?"

"इसे मैं किराये पर लाया हूँ।" रजनीश ने कहा और लंगूर जैसे बालोंवाला कोट उतारकर उसने अपने कैरियर में फँसा लिया। थैला उसने प्रमोद के कैरियर में लगा दिया।

साइकिलों पर सवार होकर वे अपने घरों की ओर चल पड़े।

रात बहुत अँधेरी थी। सेठ घनश्यामदास के बँगले में चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था।

चौकीदार के कमरे के दरवाजे पर बैठा हुआ पुलिस-कर्मचारी ऊँघने लगा था। अचानक उसके कानों में कार की आवाज टकरायी। वह हड़बड़ाकर जल्दी से उठ गया। एक कार उसने बँगले में जाती हुई देखी।

अचानक उस सिपाही की आँखें भय के मारे फैल गयीं। तभी कोई भारी कठोर वस्तु उसके सिर से टकरायी। अगले ही क्षण उसने सारी दुनिया घूमती हुई अनुभव की। किसी ने पीछे से उसके सिर पर भारी प्रहार किया था। वह टूटे तने की तरह धरती पर गिर पड़ा।

एक लम्बा-तड़ंगा आदमी हाथ में थैला सा लिये दीवार से हटकर आगे बढ़ा।

हवा में ठण्डक बढ़ गयी थी। बादलों ने चाँद को अपनी गोदी में छिपा रखा था। काला लिबास पहने हुए हमलावर ने दोनों ओर झाँका। फिर तेज चाल चलता हुआ वह पड़ोस के बँगले की ओर बढ़ चला। फाटक पार करके वह उस बँगले में घुस गया।

उधर स्याहपोश उस बँगले में पहुँचा, इधर एक और मकान का दरवाजा खुला। उसमें से एक और स्याहपोश बाहर निकला। वह काफी देर से वहाँ छिपा सारा कौतुक

देखता रहा था। उसने तेजी से सड़क पार की। उसके चेहरे पर काली सी झिल्ली थी। उसमें से केवल उसकी आँखें और मुँह का हिस्सा दिखायी दे रहा था। उसने आहिस्ता से सेठजी के बँगले का फाटक खोला और बँगले के अन्धकार में विलीन हो गया।

× × ×

लगभग आधे घण्टे बाद सिपाही की बेहोशी टूटी। दर्द के मारे उसका सिर फटा जा रहा था।

वह लड़खड़ाता हुआ उठा। अभी वह दो पग ही चला था कि उसका कलेजा मुट्ठी में आ गया। बँगले के अन्दर कोई औरत बहुत बुरी तरह से चीखी थी। सिपाही बँगले की ओर लपका।

बँगले के एक कमरे में उजाला हो गया। कुछ पल बाद नारी की दर्दनाक चीख फिर सुनायी दी।

सिपाही के रोंगटे खड़े हो गये। वह थर-थर काँपने लगा। उसने किसी तरह बरामदा पार किया। दरवाजे के पास पहुँचकर उसने दस्तक दी। किसी ने दरवाजा न खोला। तीसरी बार उसने जोर से दरवाजा पीटा।

इस बार दरवाजा खुल गया। दरवाजा सेठ घनश्यामदास ने खोला था। उनकी आँखें फटी-फटी सी थीं। उन्होंने सिपाही को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर साँस खींचकर सेठ बोला, "बाप रे बाप! मैंने कैसी डरावनी

तेजी से पलटा। उसने ड्राइंगरूम में आकर एक नम्बर मिलाया। इंस्पेक्टर धरतीधकेल को इस घटना की सूचना देने में उसे सिर्फ दो मिनट लगे।

बँगले के बाहर एक पेड़ की आड़ में कोई छाया हिलती दिखायी दी। उसने दूर खिड़की से कमरे में एक नजर डाली। फिर पेड़ की ओट से निकलकर वह छाया अन्धकार में खो गयी।

●

"अजी तुम्हें क्या हो गया है ?" पत्नी ने इंस्पेक्टर से कहा, "पैन्ट सीधी तो कर लो !"

इंस्पेक्टर ने ध्यान दिया तो झेंप गया। जल्दी से उसने पैन्ट उतारकर सीधी की और दोबारा पहनी। अर्दली को ऑर्डर दिया कि जल्दी से छः सिपाहियों को सेठ घनश्यामदास के बँगले में पहुँचने को कहे। स्वयं तैयार होकर वह जीप में बैठकर सेठ के बँगले में जा पहुँचा। उस समय रात के ढाई बज रहे थे।

इंस्पेक्टर धरतीधकेल अपनी जीप से उतरा, तो उसे ऐसा लगा जैसे कोई उसकी जीप के पास आकर खड़ा हो गया हो। अचानक उसके कानों ने एक आवाज सुनी, "आप आ गये ?"

लाश देखी है !"

"लाश ! कहाँ है ?" कहकर सिपाही अन्दर की ओर लपका ।

सरला के बेडरूम का दरवाजा खुला पड़ा था। एक औरत बाहर चौखट पर बैठी फूट-फूटकर रो रही थी।

सिपाही ने कदम बढ़ाकर कमरे में झाँका । उसकी आँखें फटी की फटी रह गयीं। वैसा भयानक दृश्य शायद उसने जीवन में पहले नहीं देखा था।

बिस्तर पर एक युवती की लाश पड़ी थी। लाश के चेहरे पर न आँखें रही थीं, न नाक बची थी। अब वहाँ केवल हड्डियाँ रह गयी थीं। चेहरे की खाल झुलस गयी थी। कुछ ऐसा ही हाल शरीर के शेष अंगों का भी था। ऐसा लगता था, जैसे किसी ने उसे सिर से पैर तक जला डाला हो। लाश इतनी विकृत हो चुकी थी कि उसे देखकर दिलेर आदमी का भी दिल डूबने लगे।

अचम्भे की बात यह थी कि पलँग पर बिछी चादर को छोड़कर कुछ भी नहीं झुलसा था। पूरे कमरे में बड़ी बुरी गंध फैली हुई थी।

"क्या तुम विश्वास के साथ कह सकती हो कि यह हमारी सरला ही है।" सेठ ने सुषमा से पूछा।

"सरला ही तो है !" सुषमा ने कहा, "क्या देख नहीं रहे कि इसकी उँगली में जो अँगूठी है, वह सरला की है ? हे राम ! हाय, मेरी सरला !"

सिपाही ने दो पल के लिए कुछ सोचा, फिर वह

यह रजनीश की आवाज थी।

"तुम यहाँ कब से आये हुए हो ?" इंस्पेक्टर ने रजनीश से पूछा।

"यहाँ आये मुझे दस मिनट हुए होंगे।"

"क्या तुम जानते हो कि सरला की हत्या कर दी गयी है ?"

"नहीं, मैं तो नहीं जानता !" रजनीश ने हैरानी से कहा, "क्या सरला की हत्या हो गयी है ?"

"हाँ !" इंस्पेक्टर बोला, "आओ, मेरे साथ बँगले में चलो।"

रजनीश उसके साथ चल पड़ा।

इंस्पेक्टर और रजनीश ने वहाँ एक बलिष्ठ और लम्बे-तड़ंगे आदमी को देखा। उसने गेरुए वस्त्र पहन रखे थे। उसके सिर के बाल सफेद थे। छोटी सी दाढ़ी भी श्वेत थी। आँखों में बड़ी तेज चमक थी। रजनीश उसे कुछ पल देखता रह गया।

गेरुए वस्त्रधारी ने कहा, "आइए इंस्पेक्टर साहब ! मैं थोड़ी देर पहले ही मेरठ से कार द्वारा लौटा हूं। सेठ घनश्यामदास और इनकी श्रीमती के रोने की आवाज सुनी तो इधर ही दौड़ा चला आया। बड़ी दर्दनाक घटना है। इनकी बेटी सरला को किसी ने बड़ी निर्दयता से जलाकर मार डाला है। लाश उसके बेडरूम में पड़ी है।"

इतने में सेठ घनश्यामदास दूसरे कमरे से निकल आया। वह अपनी आयु से भी बीस वर्ष बूढ़ा दिखायी

दे रहा था। वह उन्हें सरला के बेडरूम में ले गया। उसकी दूसरी पत्नी सुषमा का चीखना-चिल्लाना यहाँ तक सुनायी दे रहा था, "हाय मेरी सरला! तू कहाँ चली गयी ?"

पुलिस-दल ने थोड़ी ही देर में सारी कार्यवाही पूरी कर ली। लाश के कई फोटो उतारे जा चुके थे।

रजनीश भी बड़े ध्यान से लाश को देख रहा था। वह सोच रहा था कि लाश को अगर बिस्तर पर जलाया गया होता, तो चादर के नीचे का गद्दा और तकिया भी जलना चाहिए था। केवल चादर ही क्यों जली हुई थी ?

पुलिस-कर्मचारी भी इंस्पेक्टर के साथ इसी विषय पर बातें कर रहे थे कि लाश के साथ बिस्तर क्यों नहीं जला ?

रजनीश ने उनकी बातों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह सरला के बेडरूम के फर्श की ओर देखने लगा। फिर उसने अपना चेहरा फर्श की ओर झुका दिया। वह फर्श को सूँघने लगा। फिर वह उठकर सीधा खड़ा हो गया। मुँह-ही-मुँह में वह बड़बड़ा उठा, "मुझे पप्पी को अपने साथ लाना चाहिए था।"

इंस्पेक्टर ने उसे बड़बड़ाते सुना तो उसके पास आ गया। उसने पूछा, "रजनीश! यह तुम क्या बड़बड़ा रहे थे ?"

रजनीश ने लम्बी साँस खींची। उसने उत्तर देने के बजाय प्रश्न किया, "इंस्पेक्टर साहब! लाश देखकर

आपने क्या अनुमान लगाया है ?"

"लाश देखकर मुझे तो बड़ा अचम्भा हुआ है।" इंस्पेक्टर ने कहा, "क्या तुम्हें यह देखकर हैरानी नहीं हुई कि सरला तो आग से जलगई, मगर बिस्तर का न गद्दा जला और न तकिया झुलसा। हमें तो यह किसी भूत की करतूत जान पड़ती है।"

"नहीं इंस्पेक्टर साहब, यह किसी भूत की करतूत नहीं है। यह किसी धूर्त हत्यारे की करतूत है। उसने मोटे मोमजामे का लिबास पहन रखा था या मोटा मोमजामा अपने साथ लाया था। उसने सरला का गला घोंटकर हत्या की।"

रजनीश की बात सुनकर इंस्पेक्टर अचम्भे में रह गया—"गला घोंटकर ?"

शेष पुलिस कर्मचारी भी रजनीश की बात सुनकर स्तब्ध रह गये। वे जानते थे कि रजनीश जिस गहराई में से सच्चाई पकड़ लाता है, वह उसी का काम है। उन्होंने उसे बड़ी प्रशंसापूर्ण आँखों से देखा।

रजनीश ने कहा, "हत्यारे ने सरला का गला घोंट दिया, फिर लाश को मोमजामे पर रखा, लाश के ऊपर स्पिरिट डाली और आग लगा दी।"

"तो लाश को स्पिरिट से जलाया गया ?" एक पुलिस-कर्मचारी ने आश्चर्य से पूछा।

इंस्पेक्टर भी पूछ उठा, "लाश को स्पिरिट से क्यों जलाया गया ?"

रजनीश ने बताया, "स्पिरिट में यह गुण है कि वह जलती है और उड़ जाती है। हत्यारे का इरादा था कि अपने पीछे कोई निशान न छोड़ जाय। उसने लाश जला कर बिस्तर पर रख दी। यही कारण है कि गद्दा और तकिया साफ बचे हुए हैं। मोमजामे के कारण स्पिरिट को देर तक जलने और लाश को जलाने का अवसर मिल गया।"

"तुम्हें यह कैसे पता चला ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"इंस्पेक्टर साहब ! अगर आप यह फर्श सूँघें, तो आपको मोमजामे की जली हुई रबर और स्पिरिट की दुर्गन्ध आयेगी।" रजनीश ने फर्श के उस स्थान की ओर इशारा किया, जिसे उसने थोड़ी देर पहले सूँघा था।

सब पुलिस कर्मचारी उसके रहस्योद्‌घाटन पर दंग रह गये। वे सोच रहे थे कि इतनी कम आयु में रजनीश कितना चतुर जासूस बन चुका था।

रजनीश फिर एक बार लाश के पास चला आया। उसने सरला के बायें हाथ को देखा। उस हाथ की दूसरी उँगली में सोने की अँगूठी पर मीनाकारी करके अँग्रेजी का 'एस' बनाया गया था। वह सोचने लगा कि 'एस' अक्षर से सरला का नाम भी बनता है, मगर इस अक्षर से और भी तो कई नाम बन सकते हैं।

रात काफी बीत चुकी थी। रजनीश की आँखें नींद से भारी हुई जा रही थीं। उसने इंस्पेक्टर से आज्ञा ली और बाहर निकल आया। एक पेड़ की ओट से उसने

अपनी रेसिंग साइकिल निकाली। उस पर सवार होकर वह घर की ओर चल दिया।

अंजू, रीता और प्रमोद पार्क में चले आये थे। पप्पी भी उनके साथ था। प्रमोद स्वयं जाकर रीता और अंजू को बुला लाया था। रीता ने एक छोटा-सा पत्थर उठाया और पप्पी को दिखाते हुए फेंका। नटखट पप्पी इस तरह लपका, जैसे बन्दूक से छोड़ी गई गोली। वह रीता का फेंका हुआ पत्थर उठा लाया।

प्रमोद कुछ चुप-चुप-सा था।

अंजू ने पूछा, "प्रमोद! तुमने चुप क्यों साध रखी है?"

"एक अजीब बात हुई है।" प्रमोद बोला।

"कौन-सी अजीब बात?" रीता ने पूछा, "हमें नहीं बताओगे?"

"वह बात मैं रजनीश के आने पर बता सकता हूं।"

"रजनीश क्यों नहीं आया?" अंजू ने पूछा, "वह तो हम से पहले पार्क में आ जाया करता था। आओ, उसे घर से जाकर लायें।"

तीनों ने अपनी-अपनी साइकिलें उठा लीं। पप्पी पैदल ही चल पड़ा। सब मिलकर रजनीश के मकान

की ओर चल पड़े। पप्पी उनके आगे-आगे था।

वे सब रजनीश के कमरे में जा पहुंचे। उन्होंने देखा कि रजनीश लम्बी ताने सो रहा था।

"रजनीश !" अंजू ने उसे आवाज दी।

"क्या हुआ ?" रजनीश ने आँखें खोलते हुए पूछा।

अंजू ने तुरन्त बातचीत को कुतूहल से भर दिया, "रजनीश भैया ! कोई ऐसी घटना प्रमोद को मालूम है, जिसे यह तुम्हारे सामने बताने को बहुत उतावला है।"

प्रमोद तो पहले ही बताने को अधीर हो रहा था। वह बोला, "तुम्हारी दी हुई खोपड़ी में एक और फोटो आ गई है। अब उस खोपड़ी में दो फोटो हो गई हैं।"

रजनीश यह सुनते ही उठ बैठा। उसने हैरानी से पूछा, "यह दूसरी फोटो किसकी है ?"

"सेठ घनश्यामदास की बेटी सरला की।" प्रमोद ने बताया।

यह सुनकर रजनीश हक्का-बक्का रह गया। वह बोला, "तुम सबको अभी पता नहीं है। कल रात किसी ने सेठ की बेटी सरला की हत्या कर दी और उसकी लाश बुरी तरह जला दी।"

रजनीश के साथी भी चौंक पड़े।

इतने में रजनीश की मां आ गईं। वह ट्रे में चाय, बिस्किट और केक लाईं थीं।

दस मिनट में रजनीश तैयार हो गया। सबने चाय पी और बिस्किट तथा केक खाये। इसके बाद वे प्रमोद

के घर की ओर चल पड़े ।

प्रमोद का कमरा उनके वास्ते नया नहीं था। प्रमोद अपनी पुस्तकों के रैक के आगे झुक गया । उसने सामने की पुस्तकें हटा दीं । पीछे खोपड़ी रखी थी ।

रजनीश ने पूछा, "प्रमोद ! क्या रात को तुम अपने कमरे की खिड़की खोलकर सोये थे ?"

"हाँ ।" प्रमोद ने उत्तर दिया ।

रजनीश ने आगे बढ़कर रैक में से खोपड़ी उठा ली। उसने खोपड़ी की दोनों आँखों पर लगे शीशों में झाँका। बायीं आँख के शीशे में उसी नौजवान की फोटो थी, जिसने काली पैंट-कमीज पहन रखी थी, जिसकी लाश सेठ घनश्यामदास के बंगले में पाई गई थी । अब दायीं आँख के शीशे में सरला की फोटो दिखाई दे रही थी।

रजनीश ने पप्पी को पुचकारा । पप्पी पास आ गया। उसे खोपड़ी सुँघाई गई । पप्पी ने हवा में अपनी थूथनी उठाई । सूंघने के अन्दाज में उसकी थूथनी घूमकर खिड़की की ओर मुड़ गई। वह पलक झपकते उस खिड़की में से उछलकर कूद गया ।

रजनीश और उसके साथी भी बारी-बारी से खिड़की में से कूदकर बाहर पहुंचे । वे पप्पी का पीछा करने लगे। पप्पी अब मकान के पीछे मैदान में दौड़ा जा रहा था । रजनीश और उसके साथी भी उसके पीछे-पीछे दौड़ रहे थे । पप्पी उन्हें छः फर्लांग तक उसी तरह दौड़ाता हुआ ले गया। फिर वह एक पेड़ के नीचे रुककर भौंकने लगा।

रजनीश ने पेड़ के पास मोटर-साइकिल के पहियों के निशान देखे। वह बोला, "जो आदमी खोपड़ी में सरला की फोटो लगा गया था, वह मोटर साइकिल पर आया था। उसने अपनी मोटर-साइकिल इस पेड़ के नीचे खड़ी कर दी थी। आओ, लौट चलें। लौटते हुए हम सबको पैरों के निशानों पर ध्यान रखना होगा।"

वे सब पग-चिह्न देखते हुए लौटने लगे। मैदान में केवल उनके अपने पग-चिह्न ही थे।

रजनीश को एक अनोखी बात दिखाई दी। हर डेढ़ फिट की दूरी पर छोटे-छोटे दोहरे गोल निशान थे। वे छोटे-छोटे गोल निशान प्रमोद के कमरे तक चले आये थे। यह देखकर रजनीश मुस्करा दिया।

"तुम मुस्करा क्यों दिये, रजनीश ?" अंजू ने पूछा।

"मैं समझ गया कि प्रमोद के कमरे में कौन आया था और खोपड़ी में सरला की फोटो कौन रख गया।" रजनीश ने कहा।

"कौन था वह ? क्या हमें नहीं बताओगे ?"

"अभी नहीं। सुनो, तुम सब पप्पी को लेकर सेठ घनश्यामदास के बँगले के आस-पास जाओ। मैं इंस्पेक्टर साहब को लेकर वहाँ पहुंचूंगा।" रजनीश बोला।

अंजू, रीता, प्रमोद और पप्पी साइकिलों पर सवार होकर सेठ घनश्यामदास के बँगले की ओर चल दिये।

रजनीश अपनी रेसिंग साइकिल पर पुलिस-स्टेशन जा पहुँचा और उसने इंस्पेक्टर धरतीधकेल से पूछा—

"इंस्पेक्टर साहब ! क्या आपने सरला के कमरे की तलाशी ली थी ?"

"नहीं।"

"इसका मतलब है कि हम दोनों से यह त्रुटि हो गई। आइये, हम दोनों पहले उसके कमरे की तलाशी लें।" रजनीश ने कहा।

इंस्पेक्टर ने कहा, "रजनीश ! तुम अपनी साइकिल यहीं छोड़ दो। मैं तुम्हें अपनी जीप में लिये चलता हूँ।"

थोड़ी देर बाद इंस्पेक्टर की जीप सेठ के बँगले के गेट पर आकर रुकी। इंस्पेक्टर और रजनीश बँगले में प्रविष्ट हुए। सेठ जी घर में नहीं थे। उनकी दूसरी पत्नी सुषमा ने उन दोनों का स्वागत किया।

"मिसेज सुषमा ! हम सरला के कमरे की तलाशी लेने आये हैं।" इंस्पेक्टर ने बताया।

"बड़े शौक से तलाशी लीजिये।" सुषमा ने कहा और उन्हें सरला के कमरे के आगे पहुंचा दिया।

इंस्पेक्टर और रजनीश ने दरवाजा खोला। वे दोनों सरला के कमरे में प्रवेश कर गये। सरला के बेडरूम में दो अलमारियाँ थीं। एक अलमारी में कपड़े भरे थे। दूसरी अलमारी में कुछ अन्य वस्तुयें थीं। पलंग के नीचे एक बढ़िया सूटकेस रखा था।

अलमारियों में कोई काम की वस्तु हाथ नहीं लगी। सरला के सूटकेस में उसका हैंडबैग पड़ा था। रजनीश ने उसे खोलकर देखा। उसमें कानों के बाले थे, रूमाल

था, छोटा-सा दर्पण था, लिपस्टिक थी, दस-दस रुपये के पंद्रह नोट थे। हैंडबैग के एक खाने में एक फोटो थी।

रजनीश उस फोटो को आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगा। वह फोटो उस नौजवान की थी, जो एक दिन पहले सेठ घनश्यामदास के पहले कमरे में मरा हुआ मिला था। फोटो में वह नौजवान बड़ा सुन्दर दिखाई दे रहा था। फोटो के नीचे नौजवान ने अपने हस्ताक्षर कर रखे थे। उसका नाम सन्तोष कुमार था।

"यह किसकी फोटो है जो तुम बड़े ध्यान से देख रहे हो ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"इंस्पेक्टर साहब ! क्या उस नौजवान की लाश की पहचान हो चुकी है जो यहाँ से कल आप उठवा ले गये थे ?" रजनीश ने पूछा।

"नहीं, अभी तक उसे कोई नहीं पहचान सका।"

"इंस्पेक्टर साहब ! तो इतना मैं आपको बताये देता हूं कि उसका नाम सन्तोषकुमार था। यह फोटो उसी नौजवान की है।" रजनीश ने फोटो इंस्पेक्टर को थमाते हुए कहा।

इंस्पेक्टर ने फोटो हाथ में ले ली और आश्चर्य से बोला, "मृत नौजवान की फोटो सरला के हैंडबैग से निकली है। लेकिन वह तो कह रही थी कि मृत नौजवान को वह पहचानती ही नहीं है ?"

रजनीश ने कहा, "सरला ने हमसे झूठ बोला था।"

"उसने हमसे झूठ क्यों बोला ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।"

"इसमें कोई भेद था। वह भेद हमें खोलना होगा।"

इसी समय बँगले के बाहर एक कार के रुकने की आवाज सुनायी दी। तभी गोली चलने की आवाज भी हुई। यह आवाज बड़ी घुटी-घुटी-सी थी।

"गोली चलने की आवाज कहीं दूर से आई है।" इंस्पेक्टर ने कहा।

"नहीं इंस्पेक्टर साहब ! गोली इसी मकान में चली है।" रजनीश बोला।

"इसी मकान में !" इंस्पेक्टर ने आश्चर्य से कहा, "यह कैसे हो सकता है ? मुझे तो तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं आ रहा।"

"आप समझे नहीं। इस मकान के नीचे भी कोई कमरा या कमरे हैं। उसी तहखाने से गोली की आवाज आई है, इस कारण आपको लगा कि गोली कहीं दूर चलाई गई है।"

यह सुनकर इंस्पेक्टर भौंचक्का रह गया।

इतने में सुषमा दौड़ती हुई वहाँ आ पहुंची। उसका एक हाथ भय के मारे दिल पर था। उसने कहा, "क्या आपने गोली चलने की आवाज सुनी ?"

इंस्पेक्टर ने उसकी बात का जवाब न देते हुए पूछा, "गोली चलने की आवाज कहाँ से आई है ?"

इतने में भारी कदमों की आवाज सुनाई दी। फिर सेठ घनश्यामदास घबराये हुए आते दिखाई दिये। रजनीश और इंस्पेक्टर को वहाँ देखकर वह ठिठक गये।

इसके बाद हल्के कदमों की आवाज सुनाई दी। रीता, अंजू, प्रमोद और पप्पी ने प्रवेश किया। वे भी गोली की आवाज सुनकर अन्दर चले आये।

अचानक सेठ घनश्यामदास बोल पड़े, "इस घर में यह क्या हो रहा है ? किसने इस घर में गोली चलाई ? गोली की आवाज कहाँ से आई ?"

"आपके तहखाने से।" रजनीश ने बताया।

सेठ साहब उन सीढ़ियों की ओर लपके, जो नीचे जाती थीं। इंस्पेक्टर, रजनीश, उसके साथी और पप्पी भी सीढ़ियाँ उतरने लगे।

सेठ घनश्यामदास तहखाने में पहुंचे। उसका दरवाजा खुला पड़ा था। कमरे में बत्ती जल रही थी। रजनीश, उसके साथी और इंस्पेक्टर भी कमरे में आ गये।

कमरे के कालीन पर एक स्वामी जी पड़े थे। स्वामी जी की छड़ी उनके पास पड़ी थी। उनके पैरों में रबर के जूते थे। उनका गेरुआ तहमद घुटनों तक उठा हुआ था। गेरुये कुर्ते के सीने पर खून का धब्बा लगा था। गोली उनके सीने में लगी थी। घाव से खून अभी तक रिस रहा था। उनका सिर कुछ उठा हुआ था। पीठ पर एक थैला बँधा हुआ था, जो स्वामी जी के सिर का

तकिया बना हुआ था।

"स्वामी जी यहाँ कैसे ?" सुषमा के मुँह से निकला "यह तो कल आये थे। आज फिर कैसे लौट आये ?"

सेठ जी ने पूछा, "स्वामी जी सामने से आने की बजाय इस तहखाने में कैसे चले आये ? इन्हें किसने गोली मार दी ? हत्यारा कहाँ चला गया ?"

रजनीश को प्रमोद और अंजू की बात याद आ गई। पिछले दिन सेठ जी के बँगले में एक स्वामी जी के आने की उन्होंने रिपोर्ट दी थी। स्वामी जी की पीठ पर एक बड़ा-सा थैला था। वह भारी थैला स्वामी जी अपने साथ नहीं ले गये थे। आज स्वामी जी नया थैला कहाँ से ले आये थे ? इस थैले में क्या हो सकता था ?

"इंस्पेक्टर साहब !" रजनीश ने कहा, "हमें स्वामी जी के थैले की तलाशी लेनी चाहिए।"

इंस्पेक्टर ने झुककर स्वामी जी की लाश औंधी कर दी और उनकी पीठ से बँधा हुआ थैला खोल दिया।

रजनीश ने सुषमा की ओर देखते हुए पूछा, "आंटी ! यह स्वामी जी कौन हैं ? कल यह थैले में आपके वास्ते क्या लाये थे ?"

सुषमा के बजाय सेठ साहब ने उत्तर दिया, "यह स्वामी जी इस घर के गुरू और रक्षक हैं। ऋषिकेश में रहते हैं। हर तीसरे महीने आते हैं। हमारे वास्ते जड़ी-बूटियाँ लाते हैं। हम इन्हें आश्रम चलाने के वास्ते चन्दा देते हैं। कल भी स्वामी जी हमारे वास्ते जड़ी-बूटियाँ

लाये थे। हो सकता है कि इनके थैले में आज भी पहाड़ों से लाई हुई जड़ी-बूटियां हों।"

इंस्पेक्टर ने अब तक थैले के मुँह पर बँधी हुई रस्सी खोल दी थी। उसने थैले में हाथ डालकर बाहर निकाला। हाथ में बालों वाला एक कोट था। गिरेबान के ऊपर के हिस्से की बनावट ऐसी थी जैसे लंगूर हो।

सब उस कोट को फटी-फटी आँखों से देख रहे थे।

सेठ जी बोल उठे, "स्वामी जी के पास यह कैसा कोट है?"

"नहीं···नहीं, यह किसी ने धोखा दिया है। हत्यारे ने स्वामी जी की हत्या करने के बाद, लंगूर के कोट वाला थैला स्वामी जी की पीठ के साथ बाँध दिया लगता है।" सुषमा बोली।

रजनीश को एक युक्ति सूझी। उसने पप्पी को पुचकारा। पप्पी पास आ गया। उसे लाश सुँघा दी गई। पप्पी दो-तीन मिनट तक लाश के इर्द-गिर्द चक्कर काटता रहा। फिर वह तहखाने से निकलकर ऊपर चला आया। रजनीश और उसके साथी पीछे-पीछे रहे।

पप्पी मकान के पिछले दरवाजे से बाहर निकला। फिर गली में दौड़ता हुआ दूर चला गया। जिस जगह गली बायीं ओर मुड़ती थी, पप्पी वहाँ रुक गया। कुछ पल वह भौंकता रहा, फिर तेजी से पलट आया। अब पप्पी सीधा सेठ जी की कार के पास पहुंच गया और उस कार को पंजे मारता हुआ भौंकने लगा।

रजनीश समझ गया कि सेठ की कार को पप्पी पंजे क्यों मार रहा है और भौंक क्यों रहा है ? रजनीश मुस्करा दिया। उसने पप्पी को अपनी गोद में उठा लिया और प्यार से थपथपाया। फिर उसे नीचे उतार दिया।

रजनीश बोला, "अच्छा इंस्पेक्टर साहब ! आप अब लाश भिजवाने और जरूरी कार्यवाही में लग जाइये। हम चलते हैं।"

"रजनीश ! यार, एक बात तो बताते जाओ।" इंस्पेक्टर ने दीनता के साथ कहा, "यह तुम्हारा पप्पी सेठ जी की कार को देखकर क्यों भौंका था ?"

"इंस्पेक्टर साहब ! कुत्ते का काम ही भौंकना है। क्या पता कब किस पर भौंकने लगे ?" रजनीश ने व्यंग कसा।

रजनीश के साथी हँसने लगे। इंस्पेक्टर झल्ला उठा। वह पाँव पटककर बँगले की ओर चल दिया।

अंजू और रीता एक साइकिल पर बैठ गईं। प्रमोद की साइकिल पर रजनीश बैठ गया। पप्पी उनके पीछे दौड़ने लगा। वे अपनी कालोनी के पार्क में चले आये।

रजनीश ने घास पर बैठते हुए कहा, "प्रमोद और अंजू ! क्या तुम विश्वास से कह रहे हो कि सेठ के तहखाने में जो लाश पड़ी है, वह दूसरे स्वामी की है ?"

"हम बिल्कुल विश्वास से कहते हैं।" अंजू ने कहा, "तहखाने में उस स्वामी की लाश नहीं थी, जो कल आकर सुषमा से मिला था।"

"इसका मतलब है कि दो स्वामी हैं। एक वह, जो कल आया था। दूसरा स्वामी वह, जिसकी हत्या की गई है।" रजनीश बोला।

प्रमोद ने कहा, "दोनों स्वामियों की वेशभूषा एक-जैसी थी। वही कमण्डल, वैसी ही छड़ी, वैसा ही थैला। मृत स्वामी के थैले से लंगूर-कोट निकला है। कल जो स्वामी आया था, क्या उसके थैले में भी ऐसा कोट था ?"

"हो सकता है कि उसके थैले में भी लंगूर-कोट रहा हो !" रजनीश ने कहा, "ये दो स्वामी एक नयी पहेली बन गये हैं। एक यह बात भी समझ में नहीं आ रही है कि सेठ के परिवार के लोग झूठ क्यों बोल रहे हैं ?"

"कैसा झूठ ?" रीता ने पूछा।

"सरला ने झूठ बोला था कि वह मृत नौजवान को नहीं जानती। सच्चाई यह है कि उसके हैंडबैग में से उस नौजवान की फोटो निकली। उसका नाम सन्तोष कुमार था। तुम्हें याद होगा कि सरला की उंगली में एक अँगूठी रहती थी। उस अँगूठी पर मीनाकारी करके अँग्रेजी का 'एस' अक्षर बना हुआ था। अब अनुमान लगाओ कि 'एस' अक्षर से क्या बनता है ?" रजनीश ने कहा।

अंजू, रीता और प्रमोद सोच में पड़ गये। दो मिनट बाद रीता बोली, "मेरा अनुमान है कि 'एस' से सरला के नाम का पहला अक्षर बनता है।"

रजनीश बोला, "बिल्कुल ठीक कहा तुमने। लेकिन सन्तोष कुमार के नाम का पहला अक्षर भी 'एस' ही बनता

है। इसका मतलब है कि अंगूठी पर सरला नाम भी हो सकता है और सन्तोषकुमार भी। मेरा अनुमान यह है कि सरला ने सन्तोषकुमार के नाम की अँगूठी पहन रखी थी।"

इस बात पर सब साथी चौंक पड़े।

अंजू बोली, "इसका मतलब तो यह हुआ कि सरला ने जान-बूझकर झूठ बोला। जब उसने सन्तोषकुमार के नाम की अंगूठी पहन रखी थी और जब उसके हैंडबैग में सन्तोषकुमार की फोटो पाई गई, तो फिर वह कैसे उसे नहीं पहचानती थी?"

रजनीश बोला, "सुषमा आंटी भी झूठ बोल रही है। उसने स्वामी जी की लाश देखकर कहा था कि यह वही स्वामी जी हैं, जो पिछले दिन आये थे। सच्चाई यह है कि मृत स्वामी कोई और है। इस बात की पुष्टि अंजू और प्रमोद कर चुके हैं।"

"रजनीश! यह दो-दो स्वामियों का क्या चक्कर है?" प्रमोद ने पूछा।

"इस भेद की गहराई को पाने की मैं कोशिश कर रहा हूं। तुम्हें याद होगा कि जब प्रमोद के कमरे में कोई आकर खोपड़ी में सरला की फ़ोटो रख गया था, तब हमने पप्पी की मदद ली थी। खिड़की के बाहर हमें छोटे-छोटे गोल निशान नजर आये थे।"

"हाँ, रजनीश! तब तुमने कहा था कि जिसने भी खोपड़ी में सरला की फोटो रखी है, उसे तुम पहचान

चुके हो। वह कौन है?" अंजू ने पूछा।

"वह उन्हीं दो स्वामियों में से एक था।" रजनीश ने बताया।

यह सुनकर उसके साथी भौंचक्के रह गये।

रजनीश ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा, "दोहरे गोल निशान स्वामी जी की छड़ी के थे। उसने रबर के जूते पहन रखे थे। इसी कारण जमीन पर हमें जूतों के विशेष निशान दिखाई नहीं दिये। हाँ, उसके हाथ में जो छड़ी थी, उसके निशान जरूर नजर आ गये। दोहरे निशान इस कारण थे कि एक बारतो खिड़की की ओर आते हुए बने, और दूसरी बार लौटते हुए बने।"

"मान गये, रजनीश भैया!" रीता बोल उठी, "लोग तभी तो तुम्हें चालाक जासूस कहकर पुकारते हैं।"

प्रमोद बोला, "रजनीश हमें एक बात और समझाओ।"

"कौन-सी बात?" रजनीश ने पूछा।

"इस समय तक चार हत्यायें हो चुकी हैं। सन्तोष कुमार, काली पैंट-कमीज वाला, सरला और एक स्वामी अपनी-अपनी जान से हाथ धो चुके हैं। आदमी तो चार मर गये, मगर खोपड़ी में केवल दो फोटो रखी गई हैं। उसमें सन्तोष कुमार और स्वामी की फोटों क्यों नहीं रखी गई?" प्रमोद ने पूछा।

"तुमने बड़ी अच्छी बात पूछी है।" रजनीश ने कहा, "मैं भी इसी प्रश्न पर सोच रहा हूं। खोपड़ी में केवल सरला और काली पैंट-कमीज वाले की फोटो ही क्यों

रखी गईं ? अब तुम लोग जरा खोपड़ी की ओर ध्यान केन्द्रित करो। खोपड़ी में तीन गढ़े हैं। दो गढ़े आँखों में हैं। एक गढ़ा नाक में है। आँखों में अब तक सरला और एक मर्द की फोटो रखी गई है। नाक का गढ़ा अभी खाली है। उसमें भी एक फोटो लगने वाली है।"

"क्या उसमें दूसरे स्वामी की फोटो लगाई जायेगी ?" रीता ने पूछा।

"ऐसा भी हो सकता है। हमें अब चौकसी के साथ उस आदमी की टोह में रहना चाहिये। वह तीसरी फोटो लगाने के वास्ते जब आये, तो हम लोग उसे घेर लें।" रजनीश ने सलाह दी।

"हमें क्या करना चाहिये ?" अंजू ने पूछा।

"अभी बताता हूं।" रजनीश ने इतना कहने के बाद पूछा, "अंजू ! तुम डरती तो नहीं हो ?"

"मैं नहीं डरती।"

"अगर डरती नहीं हो तो तुम्हें एक काम करना होगा। हम प्रमोद के कमरे से खोपड़ी उठाकर तुम्हारे कमरे में छिपाकर रख देंगे। तुम अपने कमरे की खिड़की खोलकर सो जाना। हम रात भर तुम्हारे कमरे के बाहर पहरा देंगे। घबराना मत, अंजू !"

"तुम पहरे पर रहोगे तो मैं बिल्कुल नहीं घबराऊँगी।" अंजू ने विश्वास दिलाया।

प्रमोद ने पूछा; "रजनीश ! तुमने एक बात तो बताई ही नहीं। दूसरे स्वामी की लाश सूंघकर पप्पी क्यों भाग

खड़ा हुआ था ? सेठ के मकान से निकलकर वह गली के मोड़ तक चला गया था। फिर वापस आकर वह सीधा सेठ की कार में पंजे मारने लगा था और भौंकने लगा था। आखिर क्यों ?"

रजनीश ने पप्पी की पीठ सहलाते हुए उत्तर दिया, "हमारा पप्पी बहुत बड़ा जासूस है। इसने अपनी दौड़-धूप से जो कुछ जानकारी हमें दी है, उसमें दो बातें हो सकती हैं।"

"कौन-सी बातें ?" रीता ने पूछा।

"दूसरा स्वामी वास्तव में सेठ की कार में सवार था। इसका मतलब यह है कि दूसरा स्वामी सेठ की कार में आया था। कार से उतरकर वह चक्कर लगाता हुआ पिछली गली से आया। जब वह मकान के पिछवाड़े से तहखाने में पहुंचा, तो हत्यारा वहाँ पहले से मौजूद था। उसने तुरंत उसकी हत्या कर दी।" रजनीश ने बताया।

"दूसरी बात क्या हो सकती है ?" अंजू ने उत्सुकता से पूछा।

"दूसरी बात यह हो सकती है कि दूसरा स्वामी सेठ जी की कार में था। कार से उतरकर वह सेठ जी के तहखाने में गया। वहाँ वह शायद पहले से ठहरा हुआ था या यह हो सकता है कि दूसरा स्वामी पहले से उस तहखाने में आता-जाता था। हत्यारा उसका पीछा कर रहा था। उसने तहखाने में जाते ही दूसरे को गोली मार दी।"

रजनीश के साथी उसे प्यार भरी आँखों से देखने लगे। उन्हें इस बात पर गौरव हुआ कि उनका मित्र रजनीश वास्तव में बहुत बुद्धिमान था।

वे सब पार्क से उठे। साइकिलों पर वे प्रमोद के घर की ओर चल दिये। वहाँ से उन्होंने प्लास्टर ऑफ पेरिस की बनी खोपड़ी उठाई। उसे लेकर वे अंजू के कमरे में पहुंचे और खोपड़ी अंजू के कमरे की अलमारी में रख दी।

रात को रजनीश, रीता और प्रमोद अपनी ड्यूटी पर पहुंच गये। अंजू के कमरे की खिड़की से बाहर कुछ पेड़ थे। वे तीनों पेड़ों की ओट में बैठ गये। रात-भर उन्होंने जागते हुए पहरा दिया। अंजू के कमरे में कोई न आया।

सुबह होने पर अंजू ने खड़े होकर खिड़की के सामने अँगड़ाई ली। उसने साथियों को सफेद खोपड़ी दिखाकर इशारा किया। दो उँगलियाँ दिखा कर उसने बताया कि खोपड़ी में दो ही फोटो हैं। इसका मतलब था कि तीसरी फोटो लगाने कोई नहीं आया था।

रजनीश, रीता और प्रमोद अपने-अपने घरों को लौट गये।

उनकी आँखें नींद से बोझिल हो रही थीं।

× × ×

रजनीश बाथरूम से नहाकर निकला ही था कि उसने प्रमोद को अपने कमरे में बैठा पाया।

"क्यों प्रमोद, क्या हुआ? तुम्हारे चेहरे पर हवाइयाँ क्यों उड़ रही हैं?" रजनीश ने पूछा।

"रजनीश! रात को मेरे कमरे में फिर कोई आया था।" प्रमोद ने बताया, "उसने मेरे कमरे का सारा सामान उलट-पलट दिया। शायद वह खोपड़ी लेने आया था। वह शायद दूसरे स्वामी की फोटो लगाने आया होगा?"

"फिर तो मैंने अच्छा ही किया कि खोपड़ी ले जाकर अंजू के कमरे में रखवा दी। मुझे लगता है कि खोपड़ी की तलाश में वह अंजू के कमरे तक जरूर पहुंचेगा। खोपड़ी अगर हमारे पास रही तो अपराधी को हम पकड़कर रहेंगे। चिन्ता की कोई बात नहीं। तुम जाकर आराम करो। शाम को मिलेंगे।"

रजनीश की सलाह मानकर प्रमोद लौट गया।

शाम हुई तो इंस्पेक्टर धरती धकेल ने रजनीश को फोन किया—"रजनीश! कोई नयी गड़बड़ तो नहीं हुई?"

प्रकाशक : अलका पाकेट बुक्स
गुइन रोड, अमीनाबाद
लखनऊ

मुद्रक : शारदा प्रिंटिंग प्रेस,
लखनऊ

मूल्य : एक रुपया पचास पैसे

MAUT KI KHIDKIYAN : DETECTIVE NOVEL

रजनीश हँसते हुए बोला, "इंस्पेक्टर साहब ! अगर गड़बड़ होगी तो आपके पेट में होगी जो अक्सर बिगड़ा रहता है।"

"हँसी छोड़ो और मतलब की बात करो।" इंस्पेक्टर की खिसियाई हुई आवाज आई, "क्या कोई नयी घटना घटी ?"

"अभी नहीं। जब भी पता लगेगा, आपको सूचित कर दूंगा।" रजनीश बोला, "कल से आपने मेरी साइकिल गिरवी रख छोड़ी है, उसे तो पहुंचवा दीजिए !"

"मैं अभी कान्स्टेबल के हाथ भिजवाये देता हूं।"

"धन्यवाद !" कहकर रजनीश ने रिसीवर रख दिया।

× × ×

दोपहर का समय था। सड़कें सुनसान पड़ी थीं।

रजनीश और उसके साथी साइकिलों पर सवार थे। वे सेठ घनश्यामदास के बँगले की ओर जा रहे थे। रजनीश ने कहा था कि सेठ के बँगले की हर घड़ी निगरानी करना जरूरी है। क्योंकि सारा नाटक उसी बँगले से जुड़ा हुआ था।

प्रमोद ने पप्पी को गोद में ले रखा था और साइकिल भी चला रहा था। रीता की साइकिल के कैरियर पर एक खाली थैला था। श्रीनिवास पुरी का क्षेत्र दोप-

हर को सुनसान-सा पड़ा था।

सेठ के बँगले के पास पहुंचकर पप्पी जोर-जोर से सूँघने लगा। रजनीश को बड़ी हैरानी हुई कि पप्पी को क्या हो गया? वह गहरी साँसें क्यों ले रहा है? रजनीश भी गहरी साँस लेने लगा। उसके मुँह से निकला, "यह तो चमड़ा जलने की सी दुर्गन्ध है।"

"चमड़ा ही नहीं, मांस जलने की दुर्गन्ध भी आ रही है।" रीता बोल उठी।

अंजू ने कहा, "शायद कहीं कोई मांस पका रहा होगा।"

रजनीश बोला, "नहीं। मुझे कुछ और ही शक हो रहा है।"

उसने लपककर रीता की साइकिल के कैरियर से थैला खोला। उसमें से उसने निवाड़ की तरह चौड़ी और मजबूत पट्टी निकाली। वह पट्टी लगभग बारह फिट लम्बी थी। उसके एक सिरे पर लोहे के काँटे जैसे दो हुक लगे हुए थे। पट्टी लेकर रजनीश बँगले के पिछवाड़े आ गया। उसने पट्टी के हुक उछाल दिये। दोनों हुक दीवार के ऊपर अटक गये। पट्टी के सहारे रजनीश दीवार पर चढ़ गया। अब उसने हुक का रुख मोड़ दिया और पट्टी अन्दर की ओर लटका दी। फिर रजनीश पट्टी के सहारे बँगले में उतर गया।

चमड़ा और मांस जलने की दुर्गन्ध और भी तीखी लग रही थी।

रजनीश दबे-पाँव मकान में प्रविष्ट हुआ। मकान को अच्छी तरह देखा। सारा मकान उसे खाली पड़ा नजर आया।

एक कमरे में उसने देखा कि पलंग पर बिस्तर बिछा हुआ था। फर्श पर मखमली स्लीपर पड़े थे। तकिये पर किसी महिला का हैंडबैग धरा था। पलंग पर औरत की साड़ी चादर की तरह बिछी हुई थी।

रजनीश जानता था कि वह कमरा आंटी सुषमा का था। तभी उसने पदचाप सुनी। रजनीश छिपने की जगह ढूँढने लगा। अलमारी के सिवा उसे छिपने का कोई उचित स्थान न मिला। वह लपककर अलमारी में छिप गया। अलमारी के पट उसने इस ढंग से भिड़ा लिये कि कमरे का दृश्य वह भली-भाँति देख सके। वह दम साधे खड़ा रहा।

कुछ पल बाद उसने देखा कि एक औरत और दो मर्द कमरे में आये। औरत ने काला लबादा ओढ़ रखा था। उसके एक हाथ में पीतल का एक लम्बा-सा दीपक था। उसमें एक मोमबत्ती जल रही थी। औरत का चेहरा भी काले लबादे में पूरी तरह छिपा हुआ था। जिस हाथ में उसने दीपाधार पकड़ रखा था, उसके पीछे गोरी-गोरी कलाई दिखाई दे रही थी। हाथ की दूसरी उँगली में एक अँगूठी थी। अँगूठी पर मीनाकारी में 'एस' का अक्षर बना हुआ था।

रजनीश आँखें फाड़-फाड़कर उस औरत के हाथ को

घूर रहा था। वह सोच रहा था कि क्या यह सरला है? क्या सरला जीवित है? पलंग पर जिस सरला की लाश देखी गई थी, क्या वह किसी और की जली हुई लाश थी? क्या खोपड़ी में सरला की फोटो धोखा देने के वास्ते रखी गई थी?

रजनीश ने सोचना बन्द कर दिया। उसने अब मर्दों की ओर ध्यान दिया। उन्होंने कपड़ों पर खाकी ऐप्रन ओढ़ रखे थे। उनके चेहरे दिखाई नहीं दे रहे थे।

"बस, उसको यहाँ ले आओ। लेकिन यहाँ लाने से पहले देख लेना कि बिस्तर पर कोई दाग न लगने पाये।" काले लबादे में छिपी महिला ने कहा। उसकी आवाज बहुत बारीक थी।

"अब बिस्तर पर दाग नहीं लगेगा। उसे जलाकर अच्छी तरह धो दिया गया है।" एक मर्द ने भारी आवाज में कहा।

"अच्छा तो चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूं। उसे यहाँ ले आते हैं।"

महिला के पीछे-पीछे दोनों मर्द चले गये।

रजनीश की जिज्ञासा भड़क उठी थी। वह आगे का दृश्य देखने के लिये उसी तरह दम साधे अलमारी में खड़ा रहा।

कुछ देर बाद फिर से कदमों की आहट सुनायी देने लगी। सबसे पहले वही महिला कमरे में आई। वह एक कोने में खड़ी हो गई। फिर उन्हीं दोनों मर्दों ने प्रवेश

किया। उन्होंने एक जली हुई काली लाश उड़ा रखी थी।

रजनीश पलक झपके बिना देख रहा था। उसके सामने किसी औरत की जली हुई लाश थी। लाश अब पलंग पर रखी जा रही थी।

काले लबादे वाली महिला ने कहा, "स्वामी जी! अब आप अपने साथी को लेकर तुरन्त यहाँ से निकल जाइये। ड्राइंगरूम में जाइये। वहाँ से आवाज बदलकर इंस्पेक्टर धरती धकेल को फोन कर दीजिये। उसे कहिये कि सेठ घनश्यामदास के बँगले में जली हुई लाश मिली है। मैं भी तुम दोनों के कदमों के निशान मिटाने के बाद चल दूँगी।"

दोनों मर्द चले गये।

रजनीश ने अलमारी की झिरी में से देखा कि महिला ने खूँटी पर से तौलिया उतार लिया। फर्श पर से वह कदमों के निशान मिटाने लगी। स्वयं उसने मखमली स्लीपर पहन लिये जिनके निशान नहीं बन सकते थे।

फर्श साफ करके वह औरत चली गई। तौलिया वह अपने साथ ही लेती गई।

रजनीश भी आहिस्ता से अलमारी के पट खोलकर बाहर निकल आया। उसने लाश को बड़े ध्यान से देखा। लाश को पहचानना कठिन था। कमरे से निकल कर वह दालान में आ गया। जिस तरह पट्टी के सहारे वह आया था, उसी तरह मकान से बाहर निकल गया।

रजनीश को पसीने में नहाया हुआ देखकर रीता ने

पूछा, "क्या हुआ, रजनीश?"

"मैं बड़ा भयानक दृश्य देखकर आ रहा हूँ।" रज नीश बोला, "मैंने कहा था न कि सेठ जी के बँगले में बड़ी अजीब बातें हो रही हैं।"

"तुम क्या देखकर आ रहे हो?" प्रमोद ने उत्सुकता से पूछा।

रजनीश ने जो कुछ देखा था, अपने साथियों को बता दिया। उसने कहा, "चलो जरा बँगले के सामने पहुँचे। इंस्पेक्टर धरतीधकेल आने वाला है। बंगले में जाने से पहले मैं उससे मिल लेना चाहता हूँ।"

वे सब बँगले के सामने आ गये और इंस्पेक्टर का इंतजार करने लगे।

अंजू बोली, "मेरा अनुमान सही निकला कि चमड़े के साथ-साथ मांस जलने की दुर्गंध भी आ रही थी।"

"तुमने बिलकुल सच कहा था। वह उस औरत के जलाये जाने की दुर्गंध थी, जिसे आंटी सुषमा के बेडरूम में रखा गया है।"

"वह किस औरत की लाश हो सकती है?" प्रमोद ने पूछा, "तुमने जो रहस्य सुनाया है, उससे तो यह लगता है कि काले लबादे में ढकी हुई औरत सरला थी। तुम्हारा क्या विचार है कि सरला अभी जीवित है?"

"हाँ!" रजनीश बोला, "एक बात खटकती है कि उस महिला की आवाज सरला से अलग थी। हो सकता है कि सरला ने मुँह में पीपनी रखकर आवाज को बारीक

बना रखा हो।"

"अगर सरला जीवित है तो उसने स्वयं को मुर्दा क्यों सिद्ध कर रखा है ?" अंजू ने पूछा।

"यही भेद तो हमें जानना है।" रजनीश ने कहा।

ठीक इसी समय उन्होंने एक जीप और पुलिस-वान के हॉर्न की आवाजें सुनीं।

रजनीश तुरन्त इंस्पेक्टर की ओर लपका।

इंस्पेक्टर ने उसे देखा तो चौंक उठा। उसने कहा, "तुम यहाँ ? मैंने तुम्हारी रेसिंग साइकिल घर पहुँचवा दी थी, मगर तुम घर में नहीं मिले।"

"कोई बात नहीं। आप जरा एकान्त में पहले मेरी बात सुन लें !" रजनीश ने कहा।

इंस्पेक्टर के साथ आये पुलिस-कर्मचारी हैरान थे कि तेरह-चौदह वर्ष के इस किशोर ने इंस्पेक्टर को कितना प्रभावित कर रखा है !

अलग ले जाकर रजनीश ने इंस्पेक्टर को सारी कहानी सुना दी। फिर वह बोला, "इंस्पेक्टर साहब ! आप वह जगह जरूर देखियेगा, जहाँ उस औरत की लाश जलायी गयी है। आंटी सुषमा के बेडरूम में आपको केवल मेरे कदमों के निशान मिलेंगे, क्योंकि काले लबादे वाली महिला ने तौलिया से बाकी सारे निशान पोंछ दिये हैं।"

इंस्पेक्टर बोला, "रजनीश ! तुम भी मेरे साथ बँगले में चलो !" इंस्पेक्टर जानता था कि रजनीश को

अपने साथ रखने में उसे कई नयी बातों का इशारा मिल सकता है।

रजनीश ने उसकी बात मान ली। वह अपने साथियों के पास पहुँचा और उनसे बोला, "दोस्तो ! तुम सब घर लौट जाओ। मेरा इंतजार करना। आज हमें बहुत से काम करने हैं। मैं आकर बताऊँगा कि हमको क्या करना है।"

रजनीश के साथी जाने की तैयारी करने लगे। पप्पी को प्रमोद ने गोदी में उठाया तो रजनीश बोला, "प्रमोद ! तुम पप्पी को मेरे पास छोड़ जाओ।" सीटी बजाकर उसने पप्पी को अपने पास बुला लिया।

पुलिस-पार्टी, रजनीश और पप्पी बँगले में प्रविष्ट हो गये।

इतने में उन्होंने कार की आवाज सुनी। गली के मोड़ से एक कार आती दिखायी दी। वह सेठ घनश्याम-दास की कार थी। सेठजी कार से उतरे तो वहाँ पुलिस को देखकर हैरान भी हुए और घबरा भी गये।

इंस्पेक्टर ने बताया, "सेठजी एक भारी आवाज के मर्द ने सूचना दी है कि आपके बँगले में एक जली हुई लाश पड़ी है।"

सेठ यह सुनकर भौंचक्का रह गया। वह भी उनके साथ हो लिया। मकान में कोई नहीं था।

"सुषमा !" सेठजी ने अपनी दूसरी पत्नी को पुकारा।

उत्तर में कोई न बोला।

"सुषमा कहाँ चली गयी ?" सेठजी हैरानी से बोले, "मैं दोपहर के खाने के बाद उसे घर में छोड़कर गया था।" घबराये हुए सेठजी सुषमा के बेडरूम की ओर चल पड़े।

पलँग पर लाश पड़ी थी। उसे देखकर सेठजी के होश उड़ गये। वह रुआँसी आवाज में बोले, "यह तो सुषमा की लाश है।"

"आपकी पत्नी की लाश ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"जी हाँ ! लाश जली होने के कारण पहचानना आसान नहीं है, मगर लाश के पाँव देखकर मैं बता सकता हूँ कि यह लाश सुषमा की ही है। इंस्पेक्टर साहब, आप लाश का दायाँ पैर देखिये। दाँयें पैर की छः उँगलियाँ हैं। पाँचवीं छोटी उँगली के साथ जुड़ी हुई छठी उँगली भी है। सुषमा के दायें पैर में भी छः उँगलियाँ थीं, ठीक ऐसी ही।" सेठ ने प्रमाण दिया।

इंस्पेक्टर बोला, "हमें आपकी पत्नी के इस तरह से जल मरने का गहरा दुःख हुआ है। हम आपका सारा मकान देखना चाहते हैं, क्योंकि आपकी पत्नी की लाश को आपके ही मकान में जलाया गया है।"

सारे मकान की तलाशी ली गयी, मगर वह स्थान न ढूँढ़ा जा सका, जहाँ लाश जलायी गयी थी। पप्पी भी इस काम में कोई मदद न कर सका। रजनीश समझ गया कि उस जगह को धोकर साफ कर दिया गया है, जहाँ पर लाश जलायी गयी थी।

अचानक रजनीश को एक युक्ति सूझी। उसने सेठजी से कहा, "आंटी सुषमा ने हमें बताया था कि जो स्वामीजी आपके यहाँ आये थे, वह जड़ी-बूटियाँ लाते थे। स्वामीजी कल भी जड़ी-बूटियाँ लाये थे। क्या आप हमें वे जड़ी-बूटियाँ दिखा सकते हैं ?"

"वे जड़ी-बूटियाँ हमने वैद्य जसवन्तराय को दवा बनाने के वास्ते भिजवा दी हैं।" सेठ ने बताया।

"वैद्य जसवन्तराय की दुकान कहाँ है ?"

"खारी बावली में !"

रजनीश का मतलब सिद्ध हो चुका था। उसने इंस्पेक्टर से कहा, "आपको तो अभी यहाँ देर लगेगी। मुझे आप अपनी जीप में घर तक भिजवा दीजिए।"

इंस्पेक्टर ने ड्राइवर को हुक्म दिया कि रजनीश जहाँ कहे, वहाँ उसे पहुँचा आये।

रजनीश ने पप्पी को गोद में उठाया और जीप में आ बैठा।

•

घर पहुँचते ही रजनीश ने अपने साथियों को पार्क में इकट्ठा कर लिया।

"प्रमोद ! तुम जल्दी से एक काम करो। खारी-बावली चले जाओ। वहाँ वैद्य जसवन्तराय की दुकान

मौत की खिड़कियाँ

बच्चों और बूढ़ों की भीड़ लगी हुई थी।

"रजनीश ! यह तो समूचा साँप खा गया। जहरीला साँप !" रीता ने अचरज भरे स्वर में कहा।

जादूगर के सामने एक मेज थी। मेज पर साँपों से भरी हुई बोतल, काँच के टुकड़े और नुकीली कीलें पड़ी थीं। वह श्रीनिवासपुरी में अपने करतब दिखा रहा था। उसने सफेद झालरदार चोंगा पहन रखा था। चोंगे के ऊपर लाल अँगरखा था। उसकी मूँछें चूहे की तरह फूली हुई थीं।

साँप खाने के बाद जादूगर ने मेज पर पड़े काँच के टुकड़ों को मुट्ठी में लिया और मुँह में डालकर दाँतों से किर्च-किर्च करते हुए खा गया। उसके मुँह से खून की बूँद तक न निकली। काँच निगलकर उसने ऊपर से पानी पी लिया।

"क्या कोई काँच भी खा सकता है ?" रीता ने रजनीश से पूछा।

रजनीश की आँखें जादूगर पर टिकी हुई थीं। वह मुस्करा रहा था। उसने रीता के प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। बच्चों के चेहरों पर हैरानी थी कि जादूगर

है। वैद्य से तुम यह पूछना कि सेठ घनश्यामदास ने जो जड़ी-बूटियाँ भिजवायी थीं, उनकी दवा कब तक तैयार हो जायेगी ?"

प्रमोद अपनी साइकिल लेने घर की ओर चल दिया।

रजनीश ने अंजू और रीता से कहा, "आज हम फिर स्वामीजी को धोखा देंगे, जो लंगूर बनकर आता है। उसने प्रमोद के कमरे में आकर खोपड़ी में सरला की फोटो लगा दी थी। कल रात वह प्रमोद के कमरे में खोपड़ी ढूँढ़ता रहा था। हो सकता है कि आज अंजू के कमरे की तलाशी लेने आये।"

"तुम क्या चाहते हो ? लंगूर-कोट वाले स्वामीजी को तुम कैसा धोखा देना चाहते हो ?" अंजू ने पूछा।

"आज हम उस खोपड़ी को तुम्हारे कमरे से निकालकर रीता के कमरे में रख देंगे।" रजनीश ने अपनी योजना बतायी, "प्रमोद और मैं तुम्हारे कमरे के बाहर छिपकर निगरानी करेंगे। स्वामी तुम्हारे कमरे में आयेगा, ताकि खोपड़ी में तीसरी फोटो लगा सके। मैं इंस्पेक्टर का एक आदमी बुला लूँगा। आज हम उस लंगूर स्वामी को पकड़कर ही दम लेंगे।"

इस योजना के अनुसार वे तीनों अंजू के घर पहुँचे। वहाँ से सफेद खोपड़ी ले जाकर रीता के कमरे की अलमारी में रख दी गयी।

इस काम से निबटकर वे पार्क में आ बैठे और प्रमोद की प्रतीक्षा करने लगे।

एक घंटा बाद प्रमोद लौट आया। साथियों के पास पहुँचकर वह साइकिल पर से कूद सा पड़ा। साइकिल लुढ़ककर दूर जा गिरी।

"क्या बात है, इतनी बेचैनी क्यों है?" रजनीश ने उत्सुकता से पूछा।

"बड़ी अजीब खबर लाया हूँ, रजनीश!" प्रमोद ने पसीना पोंछते हुए कहा, "सेठ घनश्यामदास ने वैद्य जसवन्तराय को दवा बनाने के लिए कोई जड़ी-बूटी नहीं भिजवायी।"

"क्या कहा?"

"मैं 'पश्तो' में तो नहीं बोल रहा।" प्रमोद ने घास पर उनके पास बैठते हुए कहा, "वैद्य जसवन्तराय को दवा बनाने के वास्ते सेठ ने कोई जड़ी-बूटी नहीं दी।"

"कितना बड़ा झूठ बोला है सेठ ने!" रजनीश ने कहा, "सेठ के परिवार का हर आदमी झूठ बोलता है।"

वह घास पर से उछलकर खड़ा हो गया। उसने अपने साथियों से कहा, "मैं चलता हूँ। शाम हो ही चुकी है, अब खाना खाकर तुम लोगों से मिलूँगा। प्रमोद! तुम अंजू के कमरे की खिड़की के बाहर रात के दस बजे तक मेरा इन्तजार करना। इंस्पेक्टर धरतीधकेल का एक आदमी मैं तुम्हारी सहायता के वास्ते भिजवा दूँगा।"

"तुम रात के दस बजे तक कहाँ रहोगे?" रीता ने पूछा।

"यह मैं अभी नहीं बता सकता।" इतना कहकर

रजनीश तेजी से अपने घर की ओर चल दिया।

× × ×

रात के दस बजे थे।

सेठ घनश्यामदास के बँगले में घुप्प अँधेरा छाया था। बँगले के पिछवाड़े एक आकृति दिखाई दी। वह लंगूर की आकृति थी। उसकी पीठ पर थैला था। उसने थैले में से कोई वस्तु निकाली। वह वस्तु एक गोल चक्के की तरह थी। लंगूर उस गोल चक्के को खोलने लगा। वह गोल चक्का वास्तव में कमन्द था।

वह कमन्द लंगूर ने दीवार की ओर उछाल दी। कमन्द का सिरा दीवार पर अटक गया। लंगूर उसके सहारे दीवार पर चढ़ने लगा। दीवार पार करके वह बँगले में उतर गया। उसके हाथ में मोटा-सा पेन था। उसका खटका दबाया गया तो वह टॉर्च की तरह रोशनी फेंकने लगा। रास्ता देखकर उसने टॉर्च बुझा दी।

मकान के पिछले कमरे की खिड़की खुली पड़ी थी। उस खिड़की में से वह लंगूर मकान में प्रविष्ट हो गया। उसने टॉर्च फिर जलाई। वह तीन कमरे पार कर गया। तब उस लंगूर ने चौथे कमरे में रोशनी फेंकी। वह कमरा सेठ घनश्यामदास का बेडरूम था। सेठ जी पलंग पर सो रहे थे।

लंगूर ने टॉर्च की रोशनी तहखाने की सीढ़ियों की

ओर मोड़ दी। वह सीधा तहखाने में उतर गया।

तहखाने में धुँधली-सी रोशनी थी। एक कोने में बहुत कम रोशनी पहुँच रही थी। कुछ पता नहीं चल रहा था कि वह धुँधली रोशनी कहाँ से आ रही थी।

लंगूर ने अपने फाउन्टेन पेन् की टॉर्च से चारों ओर देखा। जहाँ से धुँधली रोशनी आ रही थी, उधर उसे तीन बन्द खिड़कियाँ दिखाई दीं। उन्हीं में से एक खिड़की ऐसी थी जहाँ से धुँधली रोशनी आ रही थी।

वे खिड़कियाँ भी बड़ी अनोखी थीं। प्लास्टर ऑफ पेरिस की खोपड़ी उसकी आँखों के सामने घूम गई। खोपड़ी में आँखों की जगह दो गढ़े थे। तीसरा गढ़ा नाक में था। वे तीनों खिड़कियाँ भी उसी बनावट की थीं, जैसे खोपड़ी के तीन गढ़े थे।

लंगूर ने अपनी टॉर्च की रोशनी उसी कोने की ओर फेंकी। वह चौंक पड़ा। उस कोने में एक सफेद खोपड़ी का आकार बना हुआ था।

लंगूर दबे-पाँव उस कोने की ओर बढ़ने लगा। वह खोपड़ी के आकार के सामने आ खड़ा हुआ। वहाँ उसने एक और वस्तु देखी। वे खिड़कियाँ केवल खिड़कियाँ ही नहीं, दरवाजे का भी काम देती थीं। हरएक नॉब के गिर्द कुछ नम्बर थे।

लंगूर ने पहले बायीं खिड़की का नॉब घुमाया। नॉब के हरएक नम्बर पर वह रुक जाता था। जब नॉब घूमकर नम्बर सात पर आया, तो खिड़की खुल गई।

लंगूर ने टॉर्च की रोशनी खिड़की के अन्दर फेंकी, तो वह सहमकर दो पग पीछे हट गया।

उस खिड़की के पीछे एक मेज थी। उस मेज पर एक विषधर नाग अपने फन को फैलाये बैठा था। वह अपनी आँखें इधर-उधर घुमा रहा था।

लंगूर खिड़की के किनारे की ओर आ गया। वह साँप की फुंकार और उसके डसने से अपनी रक्षा करना चाहता था। मगर साँप मेज पर ही बैठा रहा।

थोड़ी हिम्मत बटोरकर लंगूर ने साँप के पीछे की ओर झाँका। उसकी आँखें आश्चर्य से फैल गईं। खिड़की के अन्दर भी धुँधला उजाला था। वहाँ साड़ी पहने हुए एक गोरी-चिट्टी औरत बैठी थी। उसकी पीठ खिड़की की ओर थी। उसके पास ही एक स्वामी जी खड़े थे। फर्श पर एक भारी थैला पड़ा था। वह औरत थैले में से एक-एक वस्तु निकालकर शैल्फों में सजा रही थी।

थैले में से अलार्म क्लॉक, ट्रांजिस्टर, टेपरिकार्डर, घड़ियाँ और विदेशी वस्त्रों के टुकड़े निकल रहे थे। सारा कमरा पोर्टेबिल टेलिविजन सेटों से भरा हुआ था। फिल्म दिखाने के प्रोजेक्टर भी थे।

लंगूर ने स्वयं को खिड़की के किनारे की ओट में छिपा लिया। वह कान लगाकर अन्दर की आवाजें सुनने लगा।

स्वामी जी उस औरत से कह रहे थे, "कल मैं और अधिक सामान लाऊँगा।"

"कितने बजे आओगे ?"

"रात को साढ़े नौ बजे ।"

स्वामी जी का थैला खाली हो गया। स्वामी जी दायीं ओर की खिड़की की तरफ बढ़ने लगे। लंगूर यह देखकर तेजी से पल्टा। सीढ़ियाँ चढ़कर वह मकान में आ गया। कमरों के आगे से लपकता हुआ वह पिछले दालान में पहुँच गया। कमन्द के सहारे वह चार हाथ में ही दीवार पर चढ़ गया। कमन्द समेटकर वह गली में कूद गया। उसने झाड़ी में छिपाई अपनी साइकिल उठाई। वह रेसिंग साइकिल थी। लंगूर उसपर सवार होकर अन्धकार में विलीन हो गया।

यह लंगूर नहीं, रजनीश था।

× × ×

अगले दिन सवेरे ही रजनीश ने रीता, अंजू और प्रमोद को विभिन्न स्थानों पर जाने का सुझाव दिया।

रीता से उसने कहा, "तुम इंस्पेक्टर धरतीधकेल के पास जाओ। इंस्पेक्टर को साथ लेकर 'सप्रू हाउस' पहुँच जाओ।" फिर उसे एक कागज पर लिखी सूची थमाते हुए बोला, "वहाँ से इंस्पेक्टर तुम्हें यह सामान दिलवा देगा।"

रीता अपनी साइकिल उठाकर इंस्पेक्टर से मिलने चल दी।

उसके जाने के बाद रजनीश ने अंजू से कहा, "तुम कहीं से मिट्टी का एक प्याला लाओ। 'भोगल' में कई कुम्हार हैं। उनसे तुम्हें मिट्टी का प्याला मिल जाएगा। प्याला इतना बड़ा हो कि उसमें ढाई सौ ग्राम दूध आ जाय। 'भोगल' में ही बिजली की चार-छः दुकानें हैं। उनसे तीन मीटर बिजली का तार भी लाओ, जो दोहरा न हो। प्लास्टिक-चढ़ा तार मिल जाय तो और भी उत्तम रहेगा।"

"रजनीश! तुम उस तार और प्याले का क्या करोगे?" अंजू ने जिज्ञासावश पूछा।

"तुम पहले काम करो, फिर मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं इन वस्तुओं का क्या करूँगा।"

रजनीश का उत्तर सुनकर अंजू कुछ न बोली। वह रजनीश से पाँच रुपये का नोट लेकर चल दी।

अब रजनीश ने प्रमोद से कहा, "तुम भी एक काम करो।"

"बोलो!" प्रमोद ने उत्सुकता से कहा।

"तुम आज किसी तरह अपने पिता जी का रिवॉल्वर उनकी मेज से निकाल लाओ। काम निकल जाने के बाद तुम वापस उसी जगह रख देना।" रजनीश ने कहा।

प्रमोद ने कुछ सोचते हुए कहा, "काम तो बड़ा मुश्किल है, फिर भी मुझे विश्वास है कि मैं कर दूँगा।"

"बस, अब जाओ। दोपहर को इंस्पेक्टर धरती धकेल के साथ पार्क में पहुँच जाना।" रजनीश इतना

कहकर घास पर से उठ खड़ा हुआ और घर की ओर चल पड़ा।

प्रमोद भी उसके साथ पार्क से निकला और अपने घर की ओर चल दिया।

घर पहुँचकर रजनीश ने अपनी माता से कहा, "माता जी! आज शाम को जब आप दूध के डिपो जायें तो मेरे वास्ते एक बोतल दूध अलग लेती आइयेगा।"

"तुम्हारे वास्ते तो दूध लाती ही हूँ। फिर अलग दूध का क्या करोगे?" माँ ने पूछा।

"माता जी! मुझे एक निर्धन औरत को दूध देना है जिसके बच्चों ने दो दिन से दूध नहीं पिया है।"

रजनीश की माता ने अपने बेटे को प्यार से देखते हुए कहा, "तुम्हें एक बोतल दूध आज फालतू मिल जायेगा, बस?"

रजनीश मुस्करा दिया।

थोड़ी देर बाद रीता आ गई। वह सूची के अनुसार 'सप्रू हाउस' से सारा सामान ले आई थी।

अंजू भी 'भोगल' से बिजली का प्लास्टिक-चढ़ा तार और मिट्टी का प्याला लेकर आ पहुँची।

दोपहर को प्रमोद भी अपने वचनानुसार आ गया। वह इंस्पेक्टर को लेकर पार्क में पहुँच गया। रजनीश एक पेड़ के नीचे पहले से बैठा उन सबकी प्रतीक्षा कर रहा था। प्रमोद के हाथ में चमड़े की पेटी थी। रजनीश समझ गया कि प्रमोद अपने पिता का रिवॉल्वर

ले आया है ।

रजनीश ने उठकर इंस्पेक्टर की अगवानी की और बोला, "इंस्पेक्टर साहब ! सेठ जी के बँगले में कई हत्याएं हो चुकी हैं । क्या आपने इस केस को अभी तक हल नहीं किया ?"

"मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है कि सेठ जी के मकान में इतना रक्तपात क्यों हो रहा है ।" इंस्पेक्टर ने निराश स्वर में कहा ।

"आप बैठ जाइये, इंस्पेक्टर साहब ! मेरी बात पर थोड़ा ध्यान दीजिये ।" कहकर रजनीश स्वयं भी घास पर बैठ गया ।

इंस्पेक्टर उसके सामने घास पर बैठ गया ।

रजनीश दस मिनट तक उससे बातें करता रहा । उसकी बातें सुनकर इंस्पेक्टर चौंक-चौंक जाता था । मन में वह लड्डू फोड़ रहा था । उसे केस का उद्देश्य पूरी तरह मालूम हो गया था । जब वह पार्क से रवाना हुआ, तो प्रसन्नता के मारे फूला नहीं समा रहा था ।

इंस्पेक्टर के जाने के बाद प्रमोद ने चमड़े की पेटी रजनीश को देते हुए कहा, "इसमें रिवाल्वर है ।"

रजनीश ने पेटी लेकर प्रमोद को कुछ बातें बताईं ।

तभी प्रमोद की दृष्टि पार्क के एक कोने में जा अटकी । रजनीश भी उसी ओर देखने लगा । रीता इस तरह दौड़ी आ रही थी कि उसकी घबराहट छिप नहीं रही थी । वह पास आकर हांफती हुई धड़ाम से घास

पर गिर गई—"गजब हो गया, रजनीश !"

"क्या, हुआ ?" रजनीश ने पूछा।

"रजनीश ! मैं सबेरे उठते ही पार्क में आ गई थी। मैंने सबेरे अपनी अलमारी खोलकर वह खोपड़ी नहीं देखी थी। अब जो मैंने अलमारी खोली और वह खोपड़ी देखी तो दंग रह गई।"

"क्यों ?"

"खोपड़ी के तीसरे गढ़े के शीशे में आंटी सुषमा का फोटो लगा हुआ है।"

प्रमोद भी चौंक उठा, "आंटी सुषमा की फोटो ! कल उनकी हत्या करके लाश जला दी गई थी। उनकी फोटो शायद वही लंगूर लगा गया होगा।"

"हूं...तो इस तरह तीन फोटो खोपड़ी में लग गईं। सन्तोष कुमार, सरला और आंटी सुषमा की फोटो !" रजनीश बोला, "इस तरह फोटो लगाने का काम सम्पूर्ण हो गया। तो यह भी सुनलो कि आज मेरा भी छान-बीन का काम पूरा हो गया।"

यह सुनकर प्रमोद और रीता तालियां बजाने लगे।

रजनीश ने अपने साथियों को रात की योजना बताई। फिर प्रमोद से उसने पूछा, "तुम डरोगे तो नहीं ?"

प्रमोद हंसकर बोला, "जब तुम साथ हो तो डर कैसा ? मैं रात को ठीक आठ बजे तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा।

"रीता ! तुमने समझ लिया कि अंजू के साथ तुम्हें

रजनीश को ऐसे चोर लड़कों से बड़ी चिढ़ थी। वह साथियों से बोला, "आओ मेरे साथ ! उन अमरूद-चोरों को पकड़ें।"

प्रमोद और अंजू आगे-आगे चल पड़े।

एक पार्क के पास पहुँचकर अंजू ने उँगली से इशारा किया। पार्क में चार लड़के बैठे थे। वे अमरूद खा रहे थे। अंजू, प्रमोद, रीता और रजनीश ने उन चारों को घेर लिया।

रजनीश ने अपने कूल्हों पर हाथ रखकर कहा, "ये जो अमरूद तुम खा रहे हो, इनमें से गरीब बुढ़िया के चुराये हुए अमरूद अलग रख दो। तुम्हें चोरी करते शर्म नहीं आयी ? अभी से चोरी करना सीख गये !"

चारों अमरूद-चोर घबरा गये। उन्होंने वे सारे अमरूद सरकाकर घास पर रख दिये जो वे अभी खा नहीं सके थे।

"तुम अगर वचन दो कि आगे से चोरी नहीं करोगे, तो वे सारे अमरूद तुम्हें मिल सकते हैं।" रजनीश ने कहा।

"हम अब कभी चोरी नहीं करेंगे।" एक अमरूद-चोर ने दोनों कान पकड़ते हुए कहा।

यह सुनकर रजनीश हँस पड़ा। उसने जेब से अठन्नी निकाली और उस लड़के को देते हुए कहा, "ये चोरी के अमरूद ले जाओ और बुढ़िया को लौटा दो। अपनी भूल के लिए उससे क्षमा माँग लेना। इस अठन्नी के अमरूद

क्या-क्या करना है ?" रजनीश ने पूछा।

"मैंने तुम्हारी एक-एक बात याद कर ली है।" रीता बोली, "मैं और अंजू सब काम उसी तरह कर दिखाएंगी, जैसा तुमने बताया है।"

इसके बाद वे सब पार्क से उठकर चल दिये।

●

रात के साढ़े आठ बजे थे।

सेठ घनश्याम दास घर में अकेले थे। वह बड़े उदास थे। कमरे में बैठे वह कुछ सोच रहे थे और कॉफी पी रहे थे। वह बार-बार दरवाजे में से झाँककर देखने लगते थे, जैसे किसी का इन्तजार कर रहे हों।

उनके बंगले के पिछवाड़े दीवार पर एक लंगूर चढ़ रहा था। कमन्द के सहारे वह दालान में उतर आया। उसके हाथ में फाउन्टेन पेन की तरह की एक टार्च थी। वह दबे पांव उस कमरे की दीवार के साथ सटकर खड़ा हो गया, जिसमें से रोशनी बाहर आ रही थी। उसी कमरे में सेठ जी कॉफी पी रहे थे।

लंगूर ने बड़ी होशियारी के साथ कमरे में झाँका। सेठ जी अपने प्याले में केतली से कॉफी उड़ेल रहे थे। लंगूर ने इस अवसर को हाथ से न जाने दिया। वह

हवा की तरह कमरे के आगे से निकल गया। सीढ़ियां उतर कर वह तहखाने में जा पहुंचा। वहाँ मद्धिम रोशनी थी।

लंगूर सीधा बाईं खिड़की की ओर चला गया, जहां बड़े अनोखे ढंग का हल्का उजाला था। उस कमरे के एक कोने में सफेद खोपड़ी की तरह का आकार बना हुआ था। उस आकार में तीन खिड़कियां थीं, जो दरवाजों की तरह थीं।

लंगूर ने कन्धे से लटकते थैले को संभाला। उसने बाईं खिड़की की नॉब का नम्बर, सात पर लाकर रोक दिया। खिड़की खुल गई। खिड़की खुलते ही लँगूर झट से दो पग पीछे हट गया। सामने मेज पर काला नाग अपना फन फैलाये बैठा था।

अब लंगूर ने कन्धे पर से थैला उतारा। थैले में से उसने पहले मिट्टी का प्याला निकाला, फिर दूध की बोतल निकाली। दूध को प्याले में डाला। वह प्याला उसने खिड़की में रख दिया।

नाग की आँखें दूध के प्याले पर गई तो वह चौकन्ना हो गया।

लंगूर ने प्लास्टिक-चढ़ा तार हाथ में ले लिया। तार अब फन्दे का रूप ले चुका था।

नाग मिट्टी के प्याले में मुंह डालकर दूध पीने लगा।

ठीक उसी क्षण लंगूर ने तार का फन्दा नाग की

गर्दन में फंसा दिया। नाग ने अपनी गर्दन छुड़ाने के लिए बड़ा जोर लगाया। लेकिन फंदा और भी कस गया। लंगूर ने झटके के साथ नाग को खिड़की में से बाहर खींच लिया।

अब लंगूर उस खिड़की में प्रविष्ट हो गया। बिजली के तार का फन्दा उसके हाथ में था। एक शैल्फ पर मोटी कील लगी हुई थी। तार को बल देकर लंगूर ने नाग को उस कील में लटका दिया।

सेठ जी अब भी अपने कमरे में कॉफी पी रहे थे

मकान के मुख्य दरवाजे पर दस्तक हुई।

सेठ जी उठकर दरवाजा खोलने गये। दरवाजा खुला तो सामने एक औरत और दो मर्द दिखाई दिये। औरत ने काला लबादा ओढ़ रखा था। उसका चेहरा लबादे में ढका हुआ था। गोरी-गोरी कलाइयों वाला दायाँ हाथ लबादे से बाहर था। उसके हाथ की दूसरी उंगली में अंगूठी थी। अंगूठी पर मीनाकारी में अंग्रेजी का "एस" अक्षर बना हुआ था।

दोनों मर्दों ने फौजियों-जैसे खाकी हरे रंग के ऐप्रन ओढ़ रखे थे। उनके चेहरे भी खाकी हरे लिबास में छिपे हुए थे।

"तुमने बड़ी देर लगा दी?" सेठ ने महिला से पूछा।

"क्या करती! जिन लोगों को माल देना था, वे लोग आपातकालीन घोषणा से डरे हुए हैं और माल लेने में घबरा रहे हैं।" महिला ने उत्तर दिया।

"माल तो दे आई हो न ?" सेठ ने पूछा।

"दरवाजे में से तो हटो ! अन्दर आने दो।"

सेठ दरवाजे में से हटा तो महिला और उसके साथी गलियारे में आ गए। महिला ने दरवाजा बन्द कर लिया।

"देखो, हमें अपना सारा माल इधर-उधर कर देना चाहिए।" महिला बोली, "पुलिस और आय-कर वाले छापे मार रहे हैं। मैं इन दोनों को साथ ले आई हूं। ये आज ही सारा माल विभिन्न जगहों पर पहुंचा देंगे।"

"तुम बहुत समझदार हो। हमें ऐसा ही करना चाहिए।" सेठ ने कहा।

"स्वामी जी तो नहीं आए ?" महिला ने पूछा।

"नहीं, अभी नहीं आए।" सेठ ने उत्तर दिया।

"तुम्हारे होठों पर झाग लगे हुए हैं। क्या पी रहे थे ?"

"केतली में बीयर डाल रखी थी। वही पी रहा था।" सेठ ने कहा, "यह पुलिस वाले सुबह-शाम आ धमकते हैं। मैंने सोचा, क्यों किसी को कोई शक होने दें। विदेशी बीयर की बोतल देखकर व्यर्थ का शक क्यों पैदा हो ! पुलिस वाले समझते कि कॉफी पी रहा हूं।"

"ठीक किया। हम भी थोड़ी बीयर पियेंगे।" महिला बोली, "इसके बाद हमें बहुत काम करना है। आज सारा माल इस घर से बाहर अवश्य पहुंचा देना है।"

सेठ जी उन्हें अपने कमरे में ले आए। विदेशी

बीयर की बोतल खोली गई। चारों बैठकर पीने लगे। जब महिला ने अपना मग खाली किया और दोबारा बीयर से भरने लगी, तो दरवाजे पर दस्तक हुई। महिला अपना ग्लास छोड़कर जल्दी से उठी। उसने जाकर दरवाजा खोला। सामने स्वामी जी खड़े थे।

स्वामी जी के एक हाथ में कमण्डल था। दूसरे हाथ मे साँप के आकार की काली छड़ी थी। पैरों में कपड़े के जूते थे। उन्होंने गेरुए रंग का कुर्ता और तहमद पहन रखा था। पीठ पर भारी थैला था जो फूला हुआ था।

"स्वामी जी ! आज तो आप कुछ ज्यादा माल लाये हैं ?" काला लबादा ओढ़े महिला ने पूछा।

"हाँ। जल्दी करो। यह सारा सामान मौत की खिड़कियों वाले कमरे में रखवा लो।" स्वामी जी ने उत्तर दिया।

"ठीक है। आओ, पहले यही काम करलें।"।

फर्श पर छड़ी बजाते हुए स्वामी जी उस महिला के पीछे चल दिये। वे सीढ़ियाँ उतरकर तहखाने में पहुंचे।

नाग वाले कमरे में लंगूर ने छड़ी बजने की आवाज सुन ली थी। वह लपककर निकला और तहखाने के दूसरे कमरे में चला गया।

महिला ने दायीं खिड़की में प्रवेश करते हुए चौंककर कहा, "अरे ! नाग कहां चला गया ? यह दूध से भरा मिट्टी का प्याला कहाँ से आ गया ?"

स्वामीजी उसके पीछे-पीछे खिड़की पार कर गये।

महिला ने कील पर नाग को टंगे देखा तो घबराकर बोली, "कौन आया था इस कमरे में ? इस कमरे का भेद किसे मालूम हो गया ?"

"मुआमला कुछ बेढब जान पड़ता है।" स्वामी जी के मुंह से निकला।

"जल्दी से थैला उतारिये, स्वामी जी !"

स्वामीजी ने फुर्ती के साथ कन्धे पर से थैला उतारा। जैसे ही महिला ने उस थैले को घसीटा, तो उसे वह बड़ा हल्का प्रतीत हुआ। उसने मुड़ते हुए कहा, "यह थैला इतना हल्का क्यों है ? इसमें तो भूसा भरा हुआ जान पड़ता है ! तुम तो कल कह रहे थे कि आज ज्यादा माल लाओगे ?"

स्वामी जी ने जोरदार अट्टहास किया। उसने अपने कुर्ते के अन्दर से रिवॉल्वर निकालकर कहा, "आंटी सुषमा ! यह काला लबादा उतार दो और अपने असली रूप में आ जाओ !"

क्षण-भर के लिए यह महिला जड़-सी होकर रह गई। फिर सम्हलकर बोली, "तुम कौन हो ? मैं सुषमा नहीं हूं। सुषमा की तो हत्या हो चुकी है।"

"नहीं आंटी सुषमा, तुम जीवित हो। तुम साकार मेरे सामने खड़ी हो।" स्वामी जी ने कहा।

"तु...तुम कौन हो ?" महिला ने घबराकर पूछा।

"मैं रजनीश हूं। आंटी, वह औरत कोई और थी जिसकी हत्या करके लाश जला दी गई थी। तुमने झूठा

प्रचार कराया कि तुम मारी जा चुकी हो।"

सुषमा के काटो तो खून नहीं ! उसके पैरों-तले से जमीन खिसक गई।

इतने में लंगूर भी वहां आ धमका।

"यह लंगूर कौन है ?" महिला डर गई।

"यह मेरा साथी प्रमोद है।" यह कहकर रजनीश ने हुक्म दिया, "प्रमोद ! आंटी का चेहरा उघाड़ दो।"

लंगूर के वेश में प्रमोद ने महिला के चेहरे पर से काला लबादा उतार दिया। फिर बोला, "क्यों आंटी, तुम्हीं हो न ?"

"आंटी !" रजनीश बोला, "तुमने स्वयं को मुर्दा घोषित करके जो चाल चली थी, वह कामयाब नहीं हुई। प्रमोद ने आकर तुम्हारे पालतू नाग की जो दुर्दशा की है, वह तुमने देख ही ली है। यह नाग फनवाला जरूर है, मगर जहरीला नहीं है। इसके दांत तोड़ दिये गये हैं और जहर निकाल दिया गया है। यह तो केवल डराने के वास्ते यहां रखा गया था। इसी कारण तुमने इस कमरे का नाम 'मौत की खिड़कियों वाला कमरा' रख दिया था।"

आंटी बेचारी के होंठ ही नहीं खुल सके।

प्रमोद ने अपना लंगूर-कोट उतार दिया।

सुषमा उसे फटी-फटी आंखों से घूरने लगी

"वह स्वामी जी कहां हैं ?" प्रमोद ने पूछा।

रजनीश बोला, "वह भी पकड़े जा चुके होंगे।"

ठीक इसी समय सीढ़ियों से कई लोगों के उतरने की आवाजें सुनाई दीं। एक कुत्ता भी भौंका। वह पप्पी था।

प्रमोद और रजनीश के चेहरे खिल उठे।

तहखाने में सबसे पहले स्वामी जी उतरे। उनकी पीठ पर भारी थैला था। उनके पीछे इंस्पेक्टर महोदय थे। उनके बाद सेठ जी और फौजी लिबास में दो मर्द दिखाई दिये। उनके पीछे दो सार्जेंट भी थे। इनके पीछे रीता, पप्पी और अंजू थे।

रजनीश ने शेष दोनों खिड़कियां भी खोल दीं। फिर सुषमा की ओर मुड़कर उसने कहा, "लो आंटी! स्वामीजी भी आ गए। यह तुम्हारे वास्ते थैला भरकर लाये हैं।"

सुषमा के मुंह से बात नहीं निकल रही थी। वह आगन्तुकों को आंखें फाड़े घूर रही थी।

रजनीश ने इन्स्पेक्टर से कहा, "आप सब इसी कमरे में चले आइये। स्वामी जी की पीठ पर से थैला उतरवा दीजिये और देखिए कि इसमें क्या भरा है।"

इंस्पेक्टर का हैरानी के मारे बुरा हाल था। जब उसकी दृष्टि नाग पर पड़ी तो वह सहम गया।

"घबराने की जरूरत नहीं है, इंस्पेक्टर साहब!" रजनीश बोला, "मैंने जिस फन्दे में उसे कस रखा है, वह उसमें से जीवित नहीं निकल सकता। फिर यह जहरीला नहीं है। यह केवल इस कमरे में आने वाले की टाँगों को ही पकड़ सकता था, काट नहीं सकता था।"

थैला खोला गया तो उसमें से तस्करी का कीमती

माल निकला।

"अरे ! ये तो स्मग्लर हैं ?" इंस्पेक्टर के मुंह से निकला। फिर वह पप्पी की ओर इशारा करके बोला, "तुम्हारे बहादुर पप्पी ने आज कमाल कर दिखाया। उसने स्वामी जी को ऐसा घेरा कि हत्यारे को पुलिस के हवाले करके ही साँस ली।"

"जरा इधर भी आंख उठाइये।" रजनीश ने कहा।

"अरे ! सुषमा जी, आप ?" इंस्पेक्टर ने आश्चर्य से पूछा, "आप तो मर चुकी थीं ?"

"सेठ ने झूठ बोला था।" रजनीश ने बताया।

"यह सब चक्कर क्या है, रजनीश ?"

"इंस्पेक्टर साहब ! ये लोग तस्कर हैं, स्मग्लर ! ये ऐसे लोग हैं जिनके लालची पेट कभी नहीं भर सकते। रुपया बटोरकर ये दूसरों का हक मारते हैं। हमारे निर्धन देश को और भी निर्धन बनाने वाले ये राष्ट्रद्रोही हैं।"

"अच्छा !" इंस्पेक्टर भौंचक्का रह गया।

रजनीश ने कहा, "इस कमरे का यह सारा सामान इनके पाप-कर्म की गवाही दे रहा है। दरवाजे पर इन्होंने नाग रख छोड़ा था, ताकि मौत के डर से कोई इधर झांकने न पाये।"

"मगर इतनी हत्याएं क्यों की गईं ?" इंस्पेक्टर ने हैरानी से पूछा।

"इंस्पेक्टर साहब ! जब देश में 'आन्तरिक सुरक्षा कानून' लागू किया गया तो बहुत-से तस्कर पकड़े गये।

बहुत-से छिप भी गये और कुछ चोरी-छिपे धन्धा करते रहे। तब हमारे देश की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने 'आपत्कालीन घोषणा' कर दी। ये लोग घबरा गये। इन्हें पता लग गया कि अब बचना कठिन है।" रजनीश ने बताया।

"डरना तो सही था। क्योंकि इनके कर्म ही ऐसे हैं।" इंस्पेक्टर बोला, "वरना भले लोगों को इस कानून से क्या डर। यह कानून तो स्मग्लरों, मुनाफाखोरों, बदमाशों और जखीरेबाजों को सीधी राह पर लाने के वास्ते बना है।"

"तो जनाब, ये लोग भी डर गये।" रजनीश बोला, "आंटी सुषमा, काली पैंट-कमीज वाला और सन्तोष कुमार भी स्मग्लर थे। सेठ जी ने सुषमा से शादी कर ली। इमर्जेंसी लागू हुई तो उन्हें डर लगा। इन्होंने साथी स्मग्लरों की हत्या कर देने की योजना बनाई। सन्तोष कुमार और काली पैंट-कमीज वाला इसी योजना के शिकार हुए। पुलिस को उलझन में डालने के वास्ते सफेद खोपड़ी का नाटक रचा गया। उसी तरह लंगूर-कोट का पात्र भी उलझन पैदा करने के लिए सामने लाया गया। जाहिर यह किया गया कि कोई भूत ये हत्यायें कर रहा हैं। सरला की लाश जलाकर पलंग पर रख दी गई, मगर न गद्दा जला और न तकिया।"

"सरला क्यों मारी गई ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"सरला को सन्तोष कुमार से प्यार था। वह उससे

कैसे-कैसे कमाल दिखा रहा है। जादूगर ने अब मेज पर रखे नुकीले कीलों से मुट्ठी भर ली। उन्हें भी वह मुँह में डालता गया और निगलता गया। ऊपर से उसने फिर पानी पी लिया।

रीता ने रजनीश को कुहनी मारते हुए पूछा, "यह मर तो नहीं जायेगा ?"

"यह नहीं मरेगा, रीता !" रजनीश ने कहा, "कल यह ऐसा ही तमाशा कहीं और दिखायेगा।"

"साँप, काँच और कील खाकर कोई कैसे जीवित रह सकता है ?" रीता ने आश्चर्य से पूछा।

"तुम्हें पता नहीं है, साँप का जहर पहले ही निकाल लिया गया होगा। यह जो काँच इसने खाया है, वास्तव में काँच नहीं है। यह सिर्फ दूर से काँच नजर आता है। रही कीलों की बात, तो कीलें उसने अपने गले में रख ली हैं। इन लोगों के गले में पोटली होती है।" रजनीश ने रीता के सारे संशय दूर कर दिये।

इतने में प्रमोद और अंजू दौड़े-दौड़े आ पहुँचे। वे दोनों अमरूद लेने गये थे। उन दोनों के पीछे पप्पी लपका आ रहा था।

पास पहुँचकर प्रमोद ने कहा, "रजनीश ! अमरूद बेचनेवाली बुढ़िया है न, उसके अमरूद चार लड़के लूटकर ले गये। दस पैसे के अमरूद उन्होंने खरीदे और इसी बहाने ढेर सारे अमरूद चुराकर भाग गये। बेचारी बुढ़िया को पता ही न लगा। उसे कम दिखता है।"

उससे खरीद लेना और चारों मिलकर खा लेना।"

प्रमोद, रीता और अंजू ने बड़े प्यार से रजनीश को देखा। उन्होंने देखा कि जिस प्यार और चातुरी से रजनीश ने काम लिया था, उसका कितना अच्छा प्रभाव पड़ा था! चारों चोर लड़के चोरी की बुरी आदत को छोड़ने के लिए उसी क्षण तैयार हो गये थे।

रजनीश ने उन चारों लड़कों को अपने साथ लिया। उन्हें वह बुढ़िया के पास ले गया। बुढ़िया एक बँगले की चारदीवारी के बाहर टेक लगाये बैठी थी। अमरूदों की टोकरी उसके सामने पड़ी थी। कमजोर आँखों के कारण वह टोकरी पर हाथ रखे बैठी थी।

अमरूद-चोरों ने बुढ़िया को बताया, "माँ! अभी-अभी हम तुम्हारे कुछ अमरूद चुरा ले गये थे। हमें एक अच्छे लड़के ने बताया कि चोरी करना बुरा है। हम तुम्हारे अमरूद वापस करने आये हैं। इन्हें ले लो और हमें क्षमा कर दो। यह लो अठन्नी, अब हमें मोल के अमरूद दे दो।"

बुढ़िया ने सुना तो मुस्करा दी। उसने अठन्नी ले ली और लौटाये गये सारे अमरूद भी उन्हें दे दिये, साथ ही चार बड़े-बड़े अमरूद छाँटकर उन्हें और दिये। वह बोली, "चोरी न करने की तुमने प्रतिज्ञा की है, ये चार अमरूद उसका इनाम हैं।"

सब बच्चे खुश होकर चले गये।

इतने में उस बँगले के फाटक के सामने एक टैक्सी

पंद्रहवें सैट की पुस्तकें



अलका

बाल पॉकेट बुक्स

शादी करना चाहती थी । सन्तोष ने सरला को अंगूठी भी दी थी जिस पर मीनाकारी में अंग्रेजी का 'एस' अक्षर बना हुआ था । सुषमा को यह सब पसन्द न था। उसने सन्तोष को टोका लेकिन सन्तोष ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया । अतः सुषमा आंटी ने सन्तोष की हत्या करा दी । इससे सरला को गहरा दुख हुआ । उसने पुलिस के सामने सारा भेद खोलने की धमकी दी । अतः सरला को भी मार डाला गया ।" रजनीश ने बताया

"ओह, तो यह बात है !" इंस्पेक्टर बोला ।

रजनीश ने आगे बताया, "इन हत्याओं के बाद सुषमा और स्वामी जी को अपनी जान के लाले पड़ गये। इन्होंने अपने को मुर्दा घोषित करा दिया । स्वामीजी ने अपने साथी स्मगलर की हत्या कर दी और अपने स्वामी वाले रूप में दिखा दिया । इसी तरह एक स्मगलर औरत की हत्या करके सुषमा आंटी के मरने का नाटक खेला गया । खोपड़ी में तीनों की फोटो लगा दी गईं । इस तरह मैंने सारा रहस्य पाया और असली अपराधी आपके हवाले कर दिया ।"

सबने तालियाँ बजाईं ।

कुछ दिन बाद एक विशेष समारोह हुआ । जिलाधीश महोदय ने रजनीश और साथियों को एक हजार रुपये के इनाम से सम्मानित किया ।

●

आकर रुकी। उसमें से एक जवान लड़की निकली। लड़की बड़ी सुन्दर थी। उसने टैक्सी-ड्राइवर को किराया दिया और बँगले में चली गयी।

रजनीश और उसके साथी लौटने को थे कि रीता बोली, "तुमने कुछ सुना, रजनीश ? बँगले में से अभी-अभी किसी की चीख सुनायी दी है।"

"चीख !" रजनीश ने चीख नहीं सुनी थी। फिर वह मुड़ते हुए बोला, "आओ मेरे साथ।"

वे सब बँगले की ओर दौड़े। बँगले के फाटक को पार करके वे जल्दी से बरामदे में पहुँचे। बँगले का दरवाजा खुला पड़ा था। रजनीश और उसके साथी बेधड़क होकर बँगले में घुस गये।

पहले कमरे में कोई नहीं था। उसमें लोहे की दो अल्मारियाँ रखी थीं। बारी-बारी से उन्होंने दो-तीन कमरे देखे। वे सब हैरान रह गये कि माजरा क्या है ? जो लड़की अभी-अभी बँगले में आयी थी, वह गयी कहाँ ? बँगला खाली क्यों पड़ा था।

रजनीश चौथे कमरे में प्रविष्ट हुआ।

उसी समय कमरे में सरसराहट सी हुई। फिर कोई चीज धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ी।

अंजू के मुँह से चीख निकल गयी। उसके सामने फर्श पर कोई मर्द गिरा पड़ा था। बल्ब की तेज रोशनी में वह दृश्य भयानक दिखायी दे रहा था। गिरे पड़े मर्द के शरीर पर काली कमीज थी। उसी रंग की उसने पैन्ट